स्वस्ति

द्वितीयो भागः

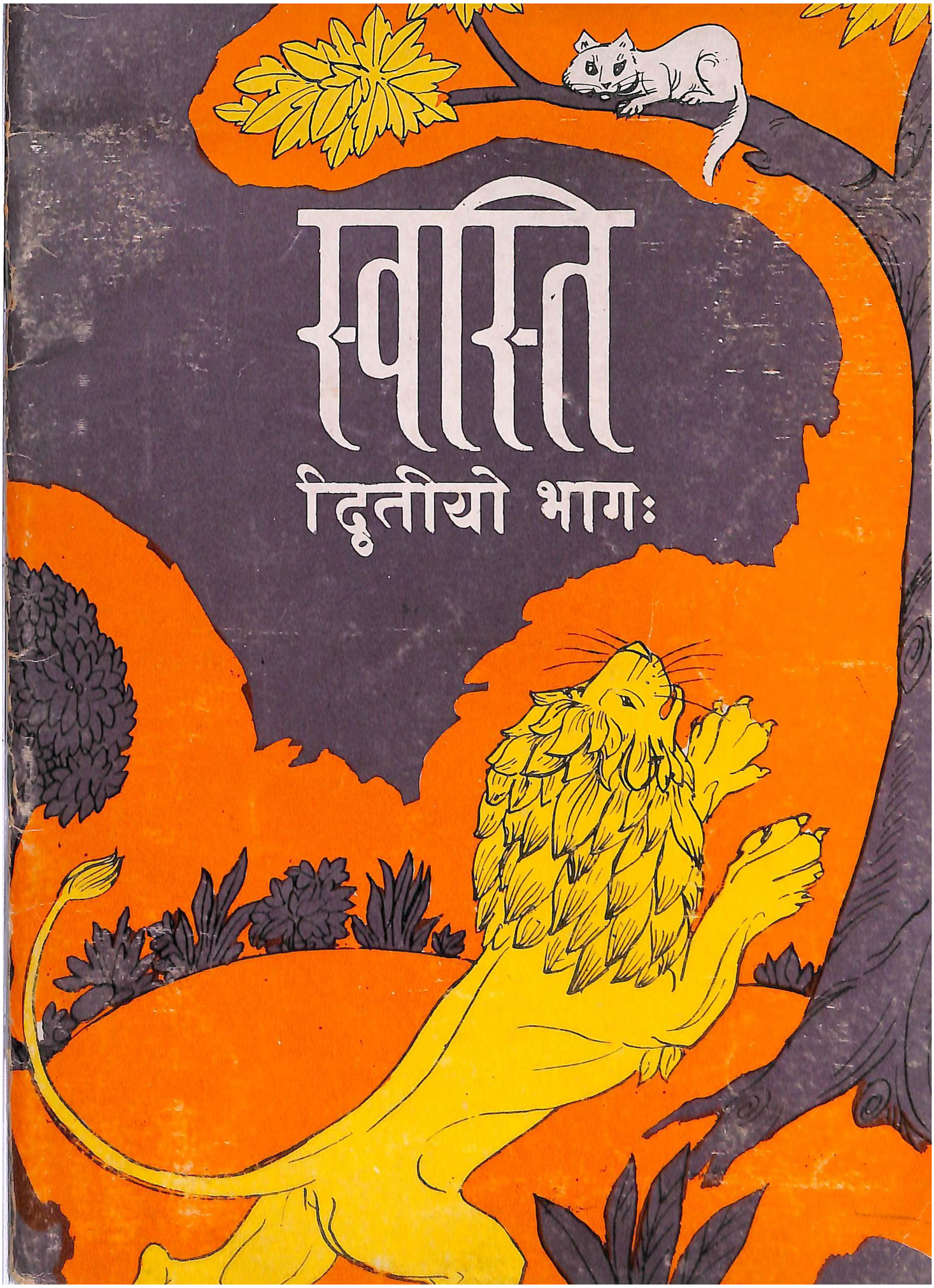

स्वस्ति

द्वितीयो भागः

संस्कृत-पाठ्यपुस्तकम्

सम्पादक
डा० मा० गो० चतुर्वेदी
श्रीमती उर्मिल खुंगर

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
जून 1980 ज्येष्ठ 1902

बीसवां पुनर्मुद्रण
जनवरी 2000 पौष 1921

PD 110TT GR

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 1980

सर्वाधिकार सुरक्षित

- ☐ प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रानिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है ।
- ☐ इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय, या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी ।
- ☐ इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है । रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा ।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस श्री अरविंद मार्ग **नई दिल्ली 110 016**	108, 100 फीट रोड, होस्डेकेरे हेली एक्सटेंशन, बनाशंकरी III इस्टेज **बैंगलूर 560 085**	नवजीवन ट्रस्ट भवन डाकघर नवजीवन **अहमदाबाद 380 014**	सी.डब्ल्यू.सी. कैम्पस 32, बी.टी. रोड, सुखचर **24 परगना 743 179**

रु. 18.00

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा दि सेन्ट्रल प्रेस (प्रा.) लि., फजलगंज, कानपुर 208 012 द्वारा मुद्रित ।

प्रस्तावना

संस्कृतस्य महत्त्वम् अस्माकं शिक्षायां सुविदितमेव। तदुद्दिश्य विद्यालये संस्कृत-शिक्षणाय उपयुक्तपाठ्यक्रमस्य तदनुरूपाठ्यपुस्तकानाञ्च विकासाय राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धान-प्रशिक्षणपरिषदः सामाजिकविज्ञानमानविकीशिक्षाविभागः निरन्तरं अग्रेसरति। अस्मिन्नेव क्रमे प्रारम्भिककक्षाभ्यः एकं चतुर्वर्षीयं आदर्श पाठ्यक्रमं निर्मीय स्वस्ति—नामधेयं संस्कृत-पाठ्यपुस्तकं विकासितं यस्यायं द्वितीयो भागः। भाषाज्ञानेन साकं छात्रेषु पुस्तकमिदं राष्ट्रियसांस्कृतिकचेतनोदयं नैतिकमूल्यविकासञ्च सम्पादयितुं सहायकं स्यादेतदर्थं प्रयत्नोऽत्र विहितः।

पुस्तकस्य योजनाप्रभृतिपाण्डुलिपिनिर्माणपर्यन्तं विविधकार्यसम्पादनाय प्रो० अनिल-विद्यालङ्कारमहाभागः, डा० मा० गो० चतुर्वेदी श्रीमती उर्मिलखुंगरमहोदया च धन्यवादमर्हन्ति। पुस्तकं प्रस्तुतरूपं प्रदातुं पाण्डुलिपेः समीक्षणसंशोधनप्रकाशनादिकार्येषु कृतश्रमः डा० कमलाकान्तमिश्रः संस्कृतप्रवाचकः साधुवादार्हः।

पुस्तकस्य कलानिर्देशनाय (Dummy) श्रीचन्द्रकुमारवाजपेयी चित्रनिर्माणाय च श्रीकेशवचन्द्रवाघमहोदयः धन्यवादमर्हतः।

पुस्तकस्यास्य निर्माणे ये विषयविशेषज्ञाः संस्कृताध्यापकाश्च सहयोगं प्रायच्छन् तान् प्रति परिषदियं स्वकृतज्ञतां प्रकटयति। पुस्तकं छात्रोपयुक्ततरं कारयितुं अनुभविभिः शिक्षकैः विशेषज्ञैश्च प्रेषिताः परामर्शाः स्वागतार्हाः भवेयुः।

नवदेहली
तिथि 3·6·80 ख्री०

शिवकुमारमित्रः
निदेशकः
राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद्

गांधी जी का जन्तर

तुम्हें एक जन्तर देता हूं। जब भी तुम्हें सन्देह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ:

जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शकल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुंचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानि क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा सन्देह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

मो० क० गांधी

आमुख

भारतीय भाषाओं के सन्दर्भ में संस्कृत की महत्ता इसी बात से सिद्ध होती है कि प्राचीन काल से ही सम्पर्क सूत्र के रूप में संस्कृत अनेक भाषाओं का साहित्य समृद्ध करने में निर्बाध रूप से सहायक होती रही है। वर्तमान प्रसंग में राष्ट्रीय शिक्षा नीति में इसी कारण से संस्कृत का विशिष्ट स्थान माना गया है। वेद, उपनिषद्, पुराण आदि में सुरक्षित प्राचीन ज्ञान और वाङ्मय संस्कृत भाषा में ही उपलब्ध हैं। इस वाङ्मय का परिचय सभी भारतीय नागरिकों को प्राप्त हो सके इस उद्देश्य से विद्यालय स्तर से ही छात्रों को संस्कृत के अध्ययन का अवसर प्रदान करने की दृष्टि से राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद् के सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग द्वारा स्वीकृत पाठ्यक्रमानुसार चार संस्कृत पुस्तकों का निर्माण किया जा रहा है। इस क्रम की प्रथम तीन पुस्तकों का निर्माण करने में यह लक्ष्य रहा है कि छात्रों को विद्यालय स्तर पर, प्रथम तीन वर्षों में संस्कृत भाषा का परिचय एवं ज्ञान प्राप्त हो सके, व इस क्रम की अन्तिम पुस्तक द्वारा संस्कृत साहित्य का परिचयात्मक ज्ञान देना उद्देश्य रहा है। चारों पुस्तकों का अध्ययन करने के पश्चात् छात्र भारतीय संस्कृति की स्रोत संस्कृत भाषा के साहित्य का अनुशीलन करने में अपेक्षित सामान्य क्षमता से सम्पन्न हो सकेंगे। इस विश्वास के साथ इस क्रम की द्वितीय पुस्तक **स्वस्ति भाग 2** आपके सम्मुख प्रस्तुत की जा रही है।

स्वस्ति भाग 2

इस पुस्तक का निर्माण इस प्रकार किया गया है कि **'स्वस्ति भाग-1'** में लिये गए विषयों की अभ्यासात्मक आवृत्ति के साथ कुछ अन्य आवश्यक बिन्दुओं का समावेश हो सके, जो संस्कृत भाषा के अध्ययन में नितान्त आवश्यक हैं। इस दृष्टि से **'स्वस्ति भाग-2'** में निम्नलिखित व्याकरण बिन्दुओं का समावेश किया गया है।

1. इकारान्त (पाठ-9), उकारान्त (पाठ-3), पुल्लिंग शब्दों के विभक्ति रूप व प्रयोग।
2. इकारान्त (पाठ-5), ईकारान्त (पाठ-10) स्त्रीलिंग शब्दों के विभक्ति रूप।
3 'स्वस्ति भाग-1' में आये सर्वनाम शब्दों की विभक्तियों का प्रयोग (पाठ-8 व पाठ-14)।

4. उपपद विभक्तियों के प्रयोग (पाठ-14 व पाठ-17)।
5. विशेषणों के विभक्ति प्रयोग (पाठ-15)।
6. संख्यावाची शब्द (पाठ-4), अव्यय (पाठ-14)।
7. दैनिक व्यवहार की क्रियाओं के लट् (पाठ-19), लृट् (पाठ-6 व पाठ-18), लङ् (पाठ-2 व पाठ-12), लोट् (पाठ-20), में रूप।
8. प्रत्यय, (पाठ-8, पाठ-13, पाठ-16), स्वर सन्धि के कुछ भेद (पाठ-3, पाठ-6, पाठ-9)।

उपर्युक्त बिन्दुओं के आधार पर विकसित किये गए इन पाठों के अध्ययन से छात्रों द्वारा इस स्तर पर संस्कृत शिक्षण के इन उद्देश्यों की प्राप्ति हो सकेगी।

1. संस्कृत शब्दों का शुद्ध उच्चारण व संस्कृत पाठों का शुद्ध वाचन।
2. संस्कृत वाक्यों का शुद्ध लेखन।
3. सरल संस्कृत वाक्यों की रचना द्वारा अभिव्यक्ति।
4. संस्कृत में वार्तालाप हेतु आवश्यक व्याकरण बिन्दुओं का परिचय।
5. संस्कृत से मातृभाषा व मातृभाषा से संस्कृत में अनुवाद करने की योग्यता प्राप्त करना।

पाठों की सरल भाषा व प्रस्तुतीकरण की रोचक विधि छात्रों को संस्कृत के अध्ययन में सहायक हो सकेगी। शिक्षक बन्धुओं पर भी इस दृष्टि से गुरुतर व गरिमामय विशेष दायित्व है और उनके प्रयासों पर ही अध्यापन की सफलता निर्भर करती है। आशा है कि छात्रों को लेखन व वाचन के अधिकाधिक आवृत्ति अभ्यासों द्वारा शिक्षक-बन्धु संस्कृत शिक्षण के अपेक्षित लक्ष्यों को प्राप्त करने में अपनी भूमिका का सहज निर्वाह कर सकेंगे।

विषय-सूची

प्रस्तावना		
आमुख		
वन्दना		IX
प्रथमः पाठः	विद्यामहिमा (श्लोकाः)	1
द्वितीयः पाठः	चतुरः काकः	3
तृतीयः पाठः	मूर्खमित्रम्	5
चतुर्थः पाठः	दया सर्वेषु प्राणिषु	8
पञ्चमः पाठः	तपसा किं न सिद्ध्यति	11
षष्ठः पाठः	समवायो हि दुर्जयः	14
सप्तमः पाठः	नीतिश्लोकाः (श्लोकाः)	17
अष्टमः पाठः	चतुरः वानरः	19
नवमः पाठः	भूपतिः मायादासः	23
दशमः पाठः	नद्यः	27
एकादशः पाठः	चाणक्यनीतिः (श्लोकाः)	31
द्वादशः पाठः	लवकुशौ	33
त्रयोदशः पाठः	महेश्वरस्य पत्रम्	37
चतुर्दशः पाठः	नीतिमान् बालः	40
पञ्चदशः पाठः	द्वे मित्रे	44
षोडषः पाठः	कन्याकुमारी	48
सप्तदशः पाठः	न गङ्गदत्तः पुनरेति कूपम्	51
अष्टादशः पाठः	विश्वासो नैव कर्तव्यः मधुरासु खलोक्तिषु	55

एकोनविंशः पाठः	वर्षाकालः	59
विंशः पाठः	दधीचेः औदार्यम्	64
एकविंशः पाठः	सुभाषितानि (श्लोकाः)	69
द्वाविंशः पाठः	भारते भाति भारती	71
त्रयोविंशः पाठः	आभाणकाः	74
परिशिष्टम्	शब्दकोशः	75

वन्दना

अभय-सूक्तम्

यथा द्यौश्च पृथिवी च न बिभीतो न रिष्यतः
एवा मे प्राण मा बिभेः ॥ 1 ॥

यथाहश्च रात्री च न बिभीतो न रिष्यतः
एवा मे प्राण मा बिभेः ॥ 2 ॥

यथा सूर्यश्च चन्द्रश्च न बिभीतो न रिष्यतः
एवा मे प्राण मा बिभेः ॥ 3 ॥

यथा ब्रह्म च क्षत्रं च न बिभीतो न रिष्यतः
एवा मे प्राण मा बिभेः ॥ 4 ॥

यथा सत्यं चानृतं च न बिभीतो न रिष्यतः
एवा मे प्राण मा बिभेः ॥ 5 ॥

यथा भूतं च भव्यं च न बिभीतो न रिष्यतः
एवा मे प्राण मा बिभेः ॥ 6 ॥

अथर्ववेद 2·2·15

भावार्थ

जैसे आकाश और पृथिवी दोनों न दुःख देते हैं और न डरते हैं,
वैसे ही मेरे प्राण ! तू मत डर ! ॥ 1 ॥

जैसे दिन और रात न दुःख देते हैं और न डरते हैं,
वैसे ही मेरे प्राण ! तू मत डर ! ॥ 2 ॥

जैसे सूर्य और चन्द्र न दुःख देते हैं और न डरते हैं,
वैसे ही मेरे प्राण! तू मत डर! ॥ 3 ॥

जैसे ब्राह्मण जन और क्षत्रिय जन, न दुःख देते हैं और न ही डरते हैं,
वैसे ही मेरे प्राण! तू मत डर! ॥ 4 ॥

जैसे सत्य और असत्य न दुःख देते हैं और न डरते हैं,
वैसे ही मेरे प्राण! तू मत डर! ॥ 5 ॥

जैसे अतीत और भविष्यत् न दुःख देते हैं और न डरते हैं
वैसे ही मेरे प्राण! तू मत डर! ॥ 6 ॥

प्रथमः पाठः

विद्या-महिमा

न चौरहार्यं न च राजहार्यं
न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि ।
व्यये कृते वर्धत एव नित्यं
विद्याधनं सर्वधनप्रधानम् ॥1॥

विद्या ददाति विनयं विनयाद्याति पात्रताम् ।
पात्रत्वाद्धनमाप्नोति धनाद्धर्मं ततस्सुखम् ॥2॥

अपूर्वः कोऽपि कोशोऽयं विद्यते तव भारति ।
व्ययतो वृद्धिमायाति क्षयमायाति संचयात् ॥3॥

विद्वत्त्वं च नृपत्वं च नैव तुल्यं कदाचन ।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ॥4॥

किं कुलेन विशालेन विद्याहीनस्य देहिनः ।
अकुलीनोऽपि विद्यावान्देवैरपि स पूज्यते ॥5॥

शब्दार्थ

चौरहार्यम्	चोरों द्वारा चुराने योग्य
भ्रातृभाज्यम्	भाइयों द्वारा बाँटने योग्य
आप्नोति	प्राप्त करता है
कदाचन	कभी
देहिनः	प्राणी, मनुष्य

अभ्यास

1. **संस्कृत में उत्तर दो।**
   (क) व्यये कृते किं वर्धते ?
   (ख) विद्या किं ददाति ?
   (ग) सर्वत्र कः पूज्यते ?
2. **श्लोक संख्या दो और पांच का हिन्दी में अर्थ लिखो।**

द्वितीयः पाठः

चतुरः काकः

एकस्मिन् वने एकः काकः आसीत्। एकदा सः पिपासया आकुलः अभवत्। सः जलाशयम् अन्वेष्टुं वने इतस्ततः अभ्रमत्, किन्तु सुदूरं यावत् कुत्रापि कमपि जलाशयं न अपश्यत्। अन्ते सः एकं घटम् अलभत। तस्मिन् घटे स्वल्पं जलम् आसीत्, अतः सः जलं पातुम् असमर्थः अभवत्। अथ स एकम् उपायम् अचिन्तयत्। सः दूरात् पाषाण-खण्डानि आनीय घटे अक्षिपत्। एवं क्रमेण जलम् उपरि समागच्छत्। स च काकः जलं पीत्वा सुखम् अलभत।

उद्यमस्य प्रभावेण काकः सफलः अभवत् । उद्यमस्य प्रभावेण एव सर्वे जीवने सफलाः भवन्ति । उक्तं च—

उद्यमेन हि सिद्धयन्ति कार्याणि न मनोरथैः ।

शब्दार्थ

पिपासया	प्यास से
इतस्ततः	इधर-उधर
पाषाण-खण्डानि	पत्थर के टुकड़े
आनीय	लाकर
सिद्धयन्ति	सफल हो जाते हैं

अभ्यास

1· **संस्कृत में उत्तर दो—**

(क) काकः कुत्र आसीत् ?

(ख) सः कया आकुलः अभवत् ?

(ग) सः किं कर्तुम् असमर्थः अभवत् ?

(घ) सः घटे कानि अक्षिपत् ?

(ङ) कार्याणि केन सिद्धयन्ति ?

2· **रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—**

(क) एकदा सः पिपासया ……… अभवत् ।

(ख) अन्ते सः एकं घटम् ……… ।

(ग) घटे स्वल्पम् ……… आसीत् ।

(घ) एवमेव सर्वे ……… भवन्ति ।

3· **इस कहानी का सारांश अपनी भाषा में लिखो ।**

तृतीयः पाठः

मूर्खमित्रम्

एकस्मिन् नगरे एकः नृपः आसीत्। तस्य भवने बहवः पशवः आसन्। ते तस्य सेवाम् अकुर्वन्। तेषु पशुष्वेकः वानरः तस्य प्रियः अभवत्।

एकदा नृपः सुप्तः आसीत्। तदा सः वानरः व्यजनेन तम् अवीजयत्। तस्मिन् काले एका मक्षिका नृपस्य नासिकायाम् उपाविशत्। वानरः वारं वारं तां मक्षिकां व्यजनेन निवारयति स्म। तथापि सा मक्षिका पुनः पुनः आगत्य तत्रैव अतिष्ठत्। तेन सः वानरः क्रुद्धः अभवत्। तां मक्षिकां हन्तुं सः खड्गेन प्रहारम् अकरोत्। मक्षिका तु उड्डीय दूरम् अगच्छत्, किन्तु प्रहारेण नृपस्य नासिका छिन्ना अभवत्।

अतः मूर्खजनैः सह मित्रता नोचिता।

शब्दार्थ

व्यजनेन	पंखे से
मक्षिका	मक्खी
उपाविशत्	बैठ गई
आगत्य	आकर
हन्तुम्	मारने के लिए
उड्डीय	उड़कर
छिन्ना	कटी हुई

अभ्यास

1. **संस्कृत में उत्तर दो—**

(क) नृपस्य भवने के आसन् ?

(ख) कः नृपस्य प्रियः अभवत् ?

(ग) वानरः कथं क्रुद्धः अभवत् ?

(घ) क्रुद्धः वानरः किम् अकरोत् ?

2. **उचित शब्द चुनकर वाक्य पूरा करो—**

(क) ……नगरे……नृपः आसीत् ।

(तेषु, एकस्मिन्, एका, एकः)

(ख) नृपतेः पशुषु एकः वानरः प्रियः……।

(आसन्, अस्ति, आसीत्)

(ग) नृपस्य……मक्षिका उपाविशत् ।

(मस्तके, नासिकायाम्)

(घ) वानरः मक्षिकां हन्तुं……प्रहारम् अकरोत् ।

(खड्गेन, दण्डेन)

3. **रेखांकित शब्दों के बहुवचन का प्रयोग करके वाक्य बदलो—**

(क) नगरे <u>नृपः</u> आसीत् ।

(ख) <u>वानरः</u> अवीजयत् ।

(ग) सः <u>मक्षिकां</u> निवारयति स्म ।

4. **सन्धि-विच्छेद करो—**

पशुष्वेकः, निवारितापि, नोचिता, तत्रैव ।

5. **निम्नलिखित शब्दों के लिंग, विभक्ति और वचन बताओ—**

नृपः, वानरेण, पशुषु, प्रहारम् ।

चतुर्थः पाठः

दया सर्वेषु प्राणिषु

देवदत्तः जनकेन सह आपणम् अगच्छत् । तत्र सः एकं पुरुषम् अपश्यत् । सः पुरुषः शुकानां विक्रेता । देवदत्तः जनकम् अवदत्— 'तात ! अहं द्वौ शुकौ क्रेतुम् इच्छामि ।' तस्य जनकः तं पुरुषम् अपृच्छत्— 'द्वयोः

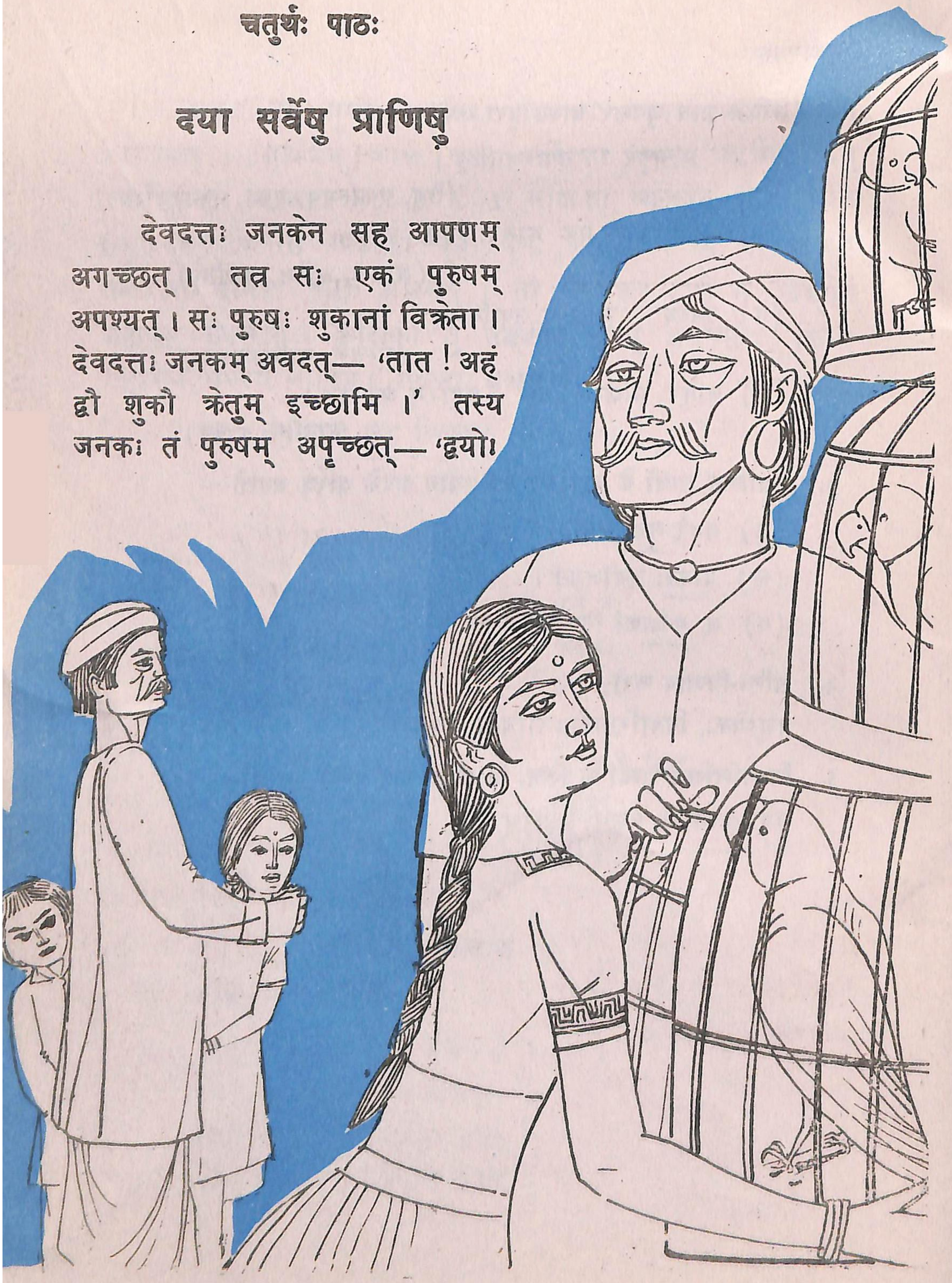

शुकयोः किं मूल्यम् ?' पुरुषः प्रत्यवदत्— 'एतानि त्रीणि पञ्जराणि। त्रिष्वेतेषु नव शुकाः। त्वं द्वौ शुकौ क्रेतुम् इच्छसि, त्रीन् वा ? यदि त्रीन् शुकान् क्रेष्यसि तर्हि पञ्जरं मूल्यं विना दास्यामि।' देवदत्तः जनकं अपृच्छत्— 'एकस्मिन् पञ्जरे त्रयः शुकाः। त्रीन् अपि शुकान् क्रेष्यामि ?' पिता तम् अवदत्— 'त्रिभिः शुकैः किं करिष्यसि ? एका एव ते भगिनी। एकेनैव शुकेन युवां क्रीडितुं पारयथः। द्वाभ्यां त्रिभिः शुकैः किं वा प्रयोजनम् ?'

एतस्मिन् एव काले तिस्रः कन्याः तत्र समागच्छन्। पञ्जरे बद्धान् तान् शुकान् दृष्ट्वा दुःखिताः ताः अचिन्तयन्—

'अखिलेषु विहङ्गेषु, हन्त ! स्वच्छन्दचारिषु।
शुक, पञ्जरबन्धस्ते, मधुराणां गिरां फलम्॥'

ततः ताः तं पुरुषम् अकथयन्— 'निर्दयः असि त्वं, यत् त्वया एते शुकाः पञ्जरे बद्धाः।' सः अवदत्— 'यदीदृशी करुणा अस्ति तर्हि यूयम् एतान् नव शुकान् क्रीत्वा मोचयत।' बालिकाः तम् अपृच्छन्— 'नवानां शुकानां किं मूल्यम् ?' सः अवदत्— 'चत्वारि रूप्यकाणि पञ्चाशत् पणाः च एषां मूल्यम्। यदीच्छथ तर्हि गृह्यताम्।' एका अवदत्— 'आम् दीयताम्।' सः पुरुषः ताभ्यः तिसृभ्यः कन्याभ्यः तान् शुकान् मूल्येन अयच्छत्। ताः च तान् गगने मोचयित्वा अकथयन्— 'अनन्ते आकाशे स्वैरं विहरत।'

शब्दार्थ

आपणम्	बाज़ार
क्रेतुम्	खरीदने के लिए
पञ्जराणि	पिंजरे
भगिनी	बहिन
पणाः	पैसे

अभ्यास

1. **संस्कृत में उत्तर दो—**
   (क) देवदत्तः केन सह आपणम् अगच्छत् ?
   (ख) देवदत्तः जनकं किम् अवदत् ?
   (ग) देवदत्तः कति शुकान् क्रेतुम् इच्छति स्म ?
   (घ) मुक्ताः शुकाः कुत्र गताः ?

2. **सन्धि करो—**
   (क) प्रति + अवदत्
   (ख) त्रिषु + एतेषु
   (ग) यत् + ईदृशी
   (घ) यदि + इच्छथ

3. **निम्नलिखित के लङ् लकार में रूप लिखो और वाक्य बनाओ—**
   (क) गम्—प्रथम पुरुष, एकवचन
   (ख) कृ—प्रथम पुरुष, एकवचन
   (ग) प्रति+वद्—प्रथम पुरुष, एकवचन

पञ्चमः पाठः

तपसा किं न सिद्ध्यति

पार्वती पतिरूपेण शिवं प्राप्तुं तपस्याम् आचरति स्म । ग्रीष्मकाले सा दिवा अग्निभिः परिवृता सूर्यम् अवलोकयति स्म । हेमन्ते ऋतौ रात्रिषु शीतले जले आकण्ठं निमग्ना

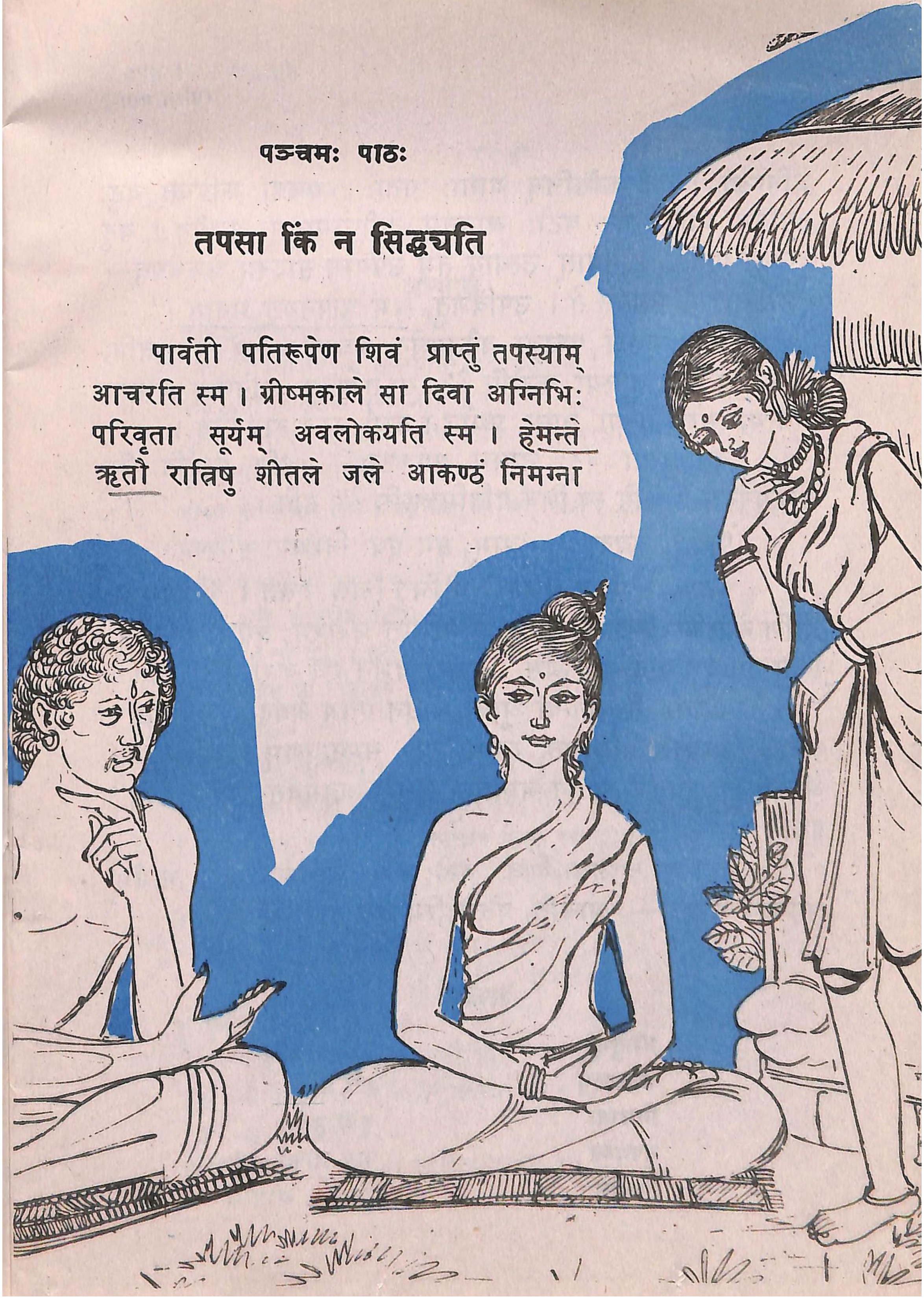

अतिष्ठत् । एवं कतिचित् मासाः गताः । एकदा कश्चित् वटुः तपोवनं प्राविशत् । वटोः आननम् देदीप्यमानम् आसीत् । वटुं दृष्ट्वा पार्वती आसनात् उत्थाय तम् उपगम्य सादरम् अकथयत्— "भोः तापस, स्वागतं ते । उपविशतु, श्रमं चापनयतु भवान् ।"

वटुः कुशलं पृष्ट्वा कौतूहलेन अवदत्— "हे तपस्विनि, किमर्थं कठिनां तपस्यां करोषि ?" सा तूष्णीम् अतिष्ठत् । तदा पार्वत्याः सखी तस्याः तपसः प्रयोजनं तस्मै वटवे न्यवेदयत् ।

तत् श्रुत्वा वटुः उमाम् अपृच्छत्— "अयि पार्वति, किं सत्यमेवेदम् ? अपि त्वं शिवं पतिमिच्छसि ?" इति ।

पार्वती अवदत्— "आम्, मम एषः निश्चयः ।"

वटुः— "मैवम् मैवम् ! नोचितं खलु एतत् । शिवस्य तु त्रीणि नेत्राणि, श्मशाने वासः, भस्मलिप्तं शरीरम्, वृषभः वाहनम्, किम् एतादृशं पतिं वाञ्छसि ? कस्योपदेशेन एवं करोषि ?" इति ।

पार्वती शिवनिन्दां श्रुत्वा क्रोधेन एवम् अवदत्— "अपसर अरे ! वाचाल, नोचितं त्वया सह सम्भाषणम् । महेश्वरस्य अलौकिकं स्वरूपं त्वं न जानासि, अथवा अहमेवेतः गमिष्यामि" इति ।

यदा सा चलिता शिवः वटोः रूपं परित्यज्य तस्याः मार्गम् अवरुध्य अवदत्— "पार्वति, प्रीतोऽस्मि तव तपोभिः" इति ।

शब्दार्थ

प्राप्तुम्	पाने के लिए
आकण्ठम्	गले तक
निमग्ना	डूबी हुई
उपगम्य	पास जाकर, पहुँचकर
तूष्णीम्	चुपचाप, खामोश

अपसर	दूर हो
वाचाल	हे बातूनी, अधिक बोलने वाला

अभ्यास

1. **संस्कृत में उत्तर दो—**
   (क) पार्वती किमर्थं तपस्याम् आचरति स्म ?
   (ख) तस्याः आश्रमं कः आगच्छत् ?
   (ग) पार्वत्याः वटुं प्रति क्रोधस्य किं कारणम् आसीत् ।
   (घ) वटुः कः आसीत् ?
2. **वाक्य के सामने लिखी गई धातु के लङ् लकार के उचित रूप द्वारा वाक्य पूरा करो—**
   (क) एकदा द्वौ वटू वनं ········· । (प्रविश्)
   (ख) वटोः आननम् देदीप्यमानम् ········· । (अस्)
   (ग) किं त्वं वटुना सह आश्रमम् ········· ? (गम्)
   (घ) अहम् ह्यः तपोवने पार्वतीम् ········· । (दृश्)
3. **सन्धि करो—**
   (क) प्र + अविशत् = ······ (ग) सु + आगतम् = ······
   (ख) स + आदरम् = ······ (घ) नि + अवेदयत् = ······
4. **निम्नलिखित उदाहरण के अनुसार रिक्त स्थान भरो—**
   उदाहरण—उत् + स्था + ल्यप् = उत्थाय ।
   अव् + रुध् + ······ = अवरुद्ध्य ।
   उप + गम् + ल्यप् = ······ ।
   ······ + त्यज् + ल्यप् = परित्यज्य ।
5. **संस्कृत में अनुवाद करो—**
   (क) पार्वती हिमालय की पुत्री थी ।
   (ख) उसने आश्रम में कठोर तपस्या की ।
   (ग) वह वटु नहीं था ।
   (घ) पार्वती की तपस्या से शिव प्रसन्न हुए ।

षष्ठः पाठः

समवायो हि दुर्जयः

पुरा एकस्मिन् वृक्षे एका चटका प्रतिवसति स्म । कालेन तस्याः सन्ततिः जाता । एकदा कश्चित् प्रमत्तः गजः तं वृक्षमधः आगत्य शाखां शुण्डेन अत्रोटयत् । चटकायाः नीडं भुवि अपतत् । तेन अण्डानि विशीर्णानि । अथ सा चटका व्यलपत् । तस्याः विलापं श्रुत्वा काष्ठकूटः नाम खगः दुःखेन ताम् अपृच्छत्— "भद्रे, किमर्थं विलपसि" इति ।

चटकावदत्— "दुष्टेनैकेन गजेन मम सन्ततिः नाशिता। तस्य गजस्य वधेनैव मम दुःखम् अपसरति।" ततः काष्ठकूटः तां वीणारवा-नाम्न्याः मक्षिकायाः समीपम् अनयत्। तयोः वार्तां श्रुत्वा मक्षिकावदत्— "ममापि मित्रं मण्डूकः मेघनादः अस्ति। शीघ्रं तमुपेत्य यथोचितं करिष्यामः।" तदानीं तौ मक्षिकया सह गत्वा मेघनादस्य पुरः सर्वं वृत्तान्तं न्यवेदयताम्।

मेघनादः अवदत्— "यथाहं कथयामि तथा कुरुतम्। मक्षिके! प्रथमं त्वं मध्याह्ने तस्य गजस्य कर्णे शब्दं कुरु, येन सः नयने निमील्य स्थास्यति। तदा काष्ठकूटः चञ्च्वा तस्य नयने स्फोटयिष्यति। एवं सः अन्धः गजः तृषार्तः जलाशयं गमिष्यति। मार्गे गर्तस्य अन्तिके स्थितः अहमपि शब्दं करिष्यामि। मम शब्देन तं गर्तं जलाशयं मत्वा सः तस्मिन्नेव गर्ते पतिष्यति, मरिष्यति च।

अथ तथाकृते सः मत्तः गजः मध्याह्ने मण्डूकस्य शब्दम् अनुसृत्य महतः गर्तस्य अन्तः पतितः मृतः च। तथा चोक्तम्—

बहूनाम् अल्पसाराणां समवायो हि दुर्जयः।

शब्दार्थ

समवायः	समूह, संगठन
चटका	चिड़िया (गौरैया)
प्रमत्तः	मस्त, मतवाला
विशीर्णानि	तोड़ दिये
निमील्य	बन्द करके
अनुसृत्य	अनुसरण करके

अभ्यास

1. **संस्कृत में उत्तर दो—**

(क) चटका कुत्र प्रतिवसति स्म ?
(ख) तस्याः सन्ततिः केन नाशिता ?
(ग) काष्ठकूटः कः आसीत् ?
(घ) मक्षिकायाः मित्रं कः आसीत् ?
(ङ) कः चञ्च्वा गजस्य नयने स्फोटयिष्यति ?

2. **सन्धि-विच्छेद करो—**

चटकावदत्, दुष्टेनैकम्, वधेनैकम्, चोक्तम् ।

3. **सन्धि करो—**

एक + एकम् =	तथा + एव =
परम + ऐश्वर्यम् =	महा + औषधिः =
प्रति + एकम् =	

4. **निम्नलिखित धातुओं का लृट् लकार में रूप लिखो—**

	एक व०	द्वि व०	बहु व०	
गम्	....	....	....	प्र० पु०
	....	....	....	म० पु०
	....	....	....	उ० पु०
पत्	....	....	....	प्र० पु०
	....	....	....	म० पु०
	....	....	....	उ० पु०

5. **संस्कृत में अनुवाद करो—**

(क) आज मैं पत्र लिखूंगा ।
(ख) माला भोजन बनाएगी ।
(ग) तुम रामायण कब पढ़ोगे ?
(घ) क्या आप कल मेरे घर आयेंगे ?
(ङ) हम शाम को घूमने जायेंगे ।

सप्तमः पाठः

नीतिश्लोकाः

अक्रोधेन जयेत् क्रोधमसाधुं साधुना जयेत् ।
जयेत् कदर्यं दानेन जयेत् सत्येन चानृतम् ॥ 1 ॥

अनाहूतः प्रविशति अपृष्टो बहु भाषते ।
अविश्वस्ते विश्वसिति मूढचेता नराधमः ॥ 2 ॥

दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययालङ्कृतोऽपि सन् ।
मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयङ्करः ॥ 3 ॥

परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम् ।
वर्जयेत्तादृशं मित्रं विषकुम्भं पयोमुखम् ॥ 4 ॥

षड्दोषाः पुरुषेणेह हातव्या भूतिमिच्छता ।
निद्रा तन्द्रा भयं क्रोध आलस्यं दीर्घसूत्रता ॥ 5 ॥

शब्दार्थ

अनृतम्	झूठ
अनाहूतः	बिना बुलाया हुआ
परोक्षे	पीछे (अनुपस्थिति में)
विषकुम्भम्	ज़हर से भरा हुआ घड़ा

अभ्यास

1. संस्कृत में उत्तर दो—
   (क) क्रोधं कथं जयेत् ?
   (ख) अनृतं केन जयेत् ?
   (ग) मूढचेताः नराधमः किं किं करोति ?
   (घ) कीदृशं मित्रं वर्जयेत् ?
   (ङ) पुरुषेण के दोषाः हातव्याः ?
2. श्लोक संख्या 4 एवं 5 का भावार्थ लिखो ।

अष्टमः पाठः

चतुरः वानरः

एकस्मिन् नदीतटे एकः जम्बूवृक्षः आसीत् । तस्मिन् वृक्षे एकः वानरः प्रतिवसति स्म । सः नित्यं जम्बूफलानि खादति स्म । कश्चित् मकरः तस्यां नद्यामवसत् । वानरः प्रतिदिनं तस्मै जम्बूफलान्ययच्छत् । एवं मकरः तस्य मित्रमभवत् । एकदा मकरः पत्न्यै अपि दातुं मधुराणि कानिचित् फलानि आनयत् । तानि फलानि खादित्वा तस्य जाया अचिन्तयत्— "अहो यः प्रतिदिनमीदृशानि मधुराणि फलानि खादति नूनं तस्य हृदयमपि अतिमधुरं भविष्यति" इति । सा पतिमकथयत्— "यदि मां जीवितां द्रष्टुमिच्छसि तर्हि आनय शीघ्रं तस्य वानरस्य हृदयम् ।"

विवशः मकरः नदीतीरं गत्वा वानरमवदत्— "बन्धो ! तव भ्रातृजाया त्वां द्रष्टुमिच्छति । अतः मम गृहमागच्छ ।" वानरः अपृच्छत्— "कुत्र ते गृहम् ?" मकरः अकथयत्— "नदी-मध्ये ।" वानरः प्रत्यवदत्— "कथमहं तत्र गन्तुं शक्नोमि ?" मकरः अवदत् — "अलं चिन्तया । अहं त्वां स्वपृष्ठे धृत्वा गृहं नेतुं शक्नोमि" इति । तस्य वचनं सत्यं मत्वा वानरः तथा अकरोत् । नदीजले वानरं

विवशं मत्वा मकरः अकथयत्— "मम पत्नी तव हृदयं खादितुमिच्छति।" चतुरः वानरः शीघ्रमकथयत्— "मम हृदयं तु वृक्षस्य कोटरे निहितम्। कथं न त्वया पूर्वं निवेदितम्। अतः शीघ्रं तत्रैव नय येन अहं स्वहृदयमानीय भ्रातृजायायै दत्वा तां तोषयामि" इति। मूर्खः मकरः तस्याशयं न बुद्ध्वा

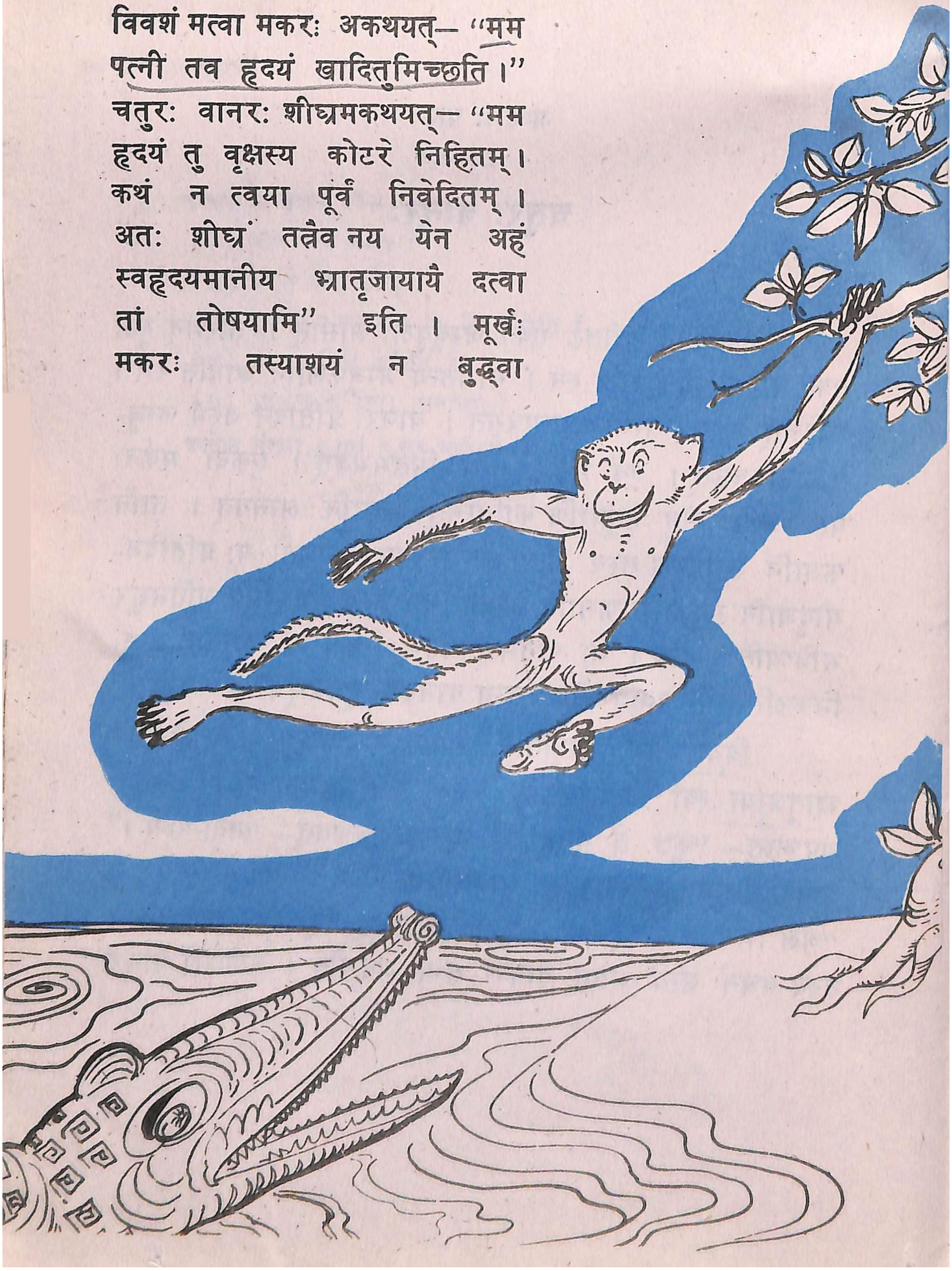

वानरं पुनः तं वृक्षं शीघ्रमनयत्। वृक्षमारुह्य वानरः अवदत् —"धिक् मूर्ख! अपि हृदयं शरीरात् पृथक् तिष्ठति? गच्छ। अत:परम् आवयोः मैत्री समाप्ता।"

शब्दार्थ

जम्बू	जामुन का पेड़
मकरः	घड़ियाल
ईदृशानि	ऐसे
मत्वा	मान कर
कोटरे	खोतर (पेड़ का खोखल)
बुद्ध्वा	जान कर

अभ्यास

1. **निम्नलिखित के उत्तर संस्कृत में दो—**
   (क) वानरस्य केन सह मैत्री अभवत्?
   (ख) वानरः मकराय किम् अयच्छत्?
   (ग) मकरी मकरं किम् अकथयत्?
   (घ) मकरः मित्रेण सह उचितं व्यवहारम् अकरोत् अनुचितं वा?

2. **निम्नलिखित उदाहरण को ध्यान से पढ़ो तथा उसके आधार पर रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—**

मधुरं फलम्।	मधुरे फले।	मधुराणि फलानि।
शुष्कं पत्रम्।	............।	............।
सुन्दरं गृहम्।	............।	............।
मम हृदयम्।	............।	............।
स्वस्थं शरीरम्।	............।	............।

3. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो—

दत्वा, अलम्, सह, द्रष्टुम्, भविष्यति, आगच्छ ।

4. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में उचित विभक्ति लगाकर वाक्य पूरा करो—

(क) मोहनः एकम्·········अभक्षयत् । (फल)

(ख) किं त्वं त्रीणि·········अभक्षयः ? (फल)

(ग) एतानि·········केषां सन्ति ? (गृह)

(घ) इदं मम मित्रस्य·········अस्ति । (गृह)

(ङ) तयोः·········कुत्र स्तः ? (गृह)

5. खाद्, दृश्, गम्, नी, दा—इन धातुओं के साथ क्त्वा, ल्यप् तथा तुमुन् प्रत्यय लगाकर रूप लिखो ।

6. संस्कृत में अनुवाद करो—

(क) मोहन मेरा प्रिय मित्र है ।

(ख) हम दोनों एक ही विद्यालय में पढ़ते हैं ।

(ग) मैं कभी-कभी मित्र के घर भी जाता हूँ ।

(घ) हम दोनों में घनिष्ठ मैत्री है ।

(ङ) मेरे मित्र के पिता मुझे देखकर प्रसन्न होते हैं ।

(च) मेरा घर गंगा के तट पर है ।

नवमः पाठः

भूपतिः मायादासः

कस्मिंश्चिद् देशे कश्चिद् भूपतिः आसीत् । तस्य नाम मायादासः । अति लुब्धः सः दरिद्रः इव जीवितं नयति स्म ।

एकदा कोऽपि मुनिः मायादासस्य प्रासादम् आगच्छत् । नृपतिः तं मुनिं सत्कारेणातोषयत् । नृपतिना सत्कृतः सन्तुष्टः मुनि अवदत्– "नृपते ! स्वस्त्यस्तु ते । अभीष्टं वरं वरय" इति । मुनिनैवं उक्तः सः भूपतिः लोभेन प्रेरितः अवदत्— "मया स्पृश्यमानाः पदार्थाः सौवर्णाः भवन्तु" इति । "तथास्तु" इत्युक्त्वा मुनिः अन्तर्हित अभवत् ।

मुने वरं लब्ध्वा गृहं प्रविष्टः मायादासः तत्र स्थितानि वस्तूनि अस्पृशत् । तेन स्पृष्टानि वस्तूनि सद्य एव सौवर्णानि जातानि । तद् दृष्ट्वा सः नितरामतुष्यत् । ततः तस्य महती पिपासा जाता । सः जलं पातुं उद्यतः अभवत् । तेन स्पृष्टं जलमपि सुवर्णपिण्डमभवत् । साधूक्तं न मृषा भवति ।

तस्मिन् अवसरे राजकुमारी कुसुममञ्जरीमादाय तत्रागता । "पितः, अतीव सुन्दराणीमानि कुसुमानि" इति चावदत् । नृपतिः तां

मञ्जरीं करेणास्पृशत् । तेन स्पृष्टा मञ्जरी सुवर्णमयी जाता। तद् दृष्ट्वा कुमारी दुःखिता अभवत्। सुतां समाश्वासयितुं प्रवृत्तः सः मायादासः ताम् अङ्के उपवेशयति स्म । हन्त, कुमारी सुवर्णप्रतिमा सञ्जाता । मायादासः शोकेनोच्चैः व्यलपत् ।

तदा भाग्यात् स एव मुनिः नृपतेः पुरतः प्रत्यक्षः अभवत्। मायादासः तं प्रणम्य–"महर्षे, कृपया दत्तं वरं निवर्तयतु। इयं कुमारी मम जीवितम्" इति न्यवेदयत्।

महर्षिः अवदत्— "मायादास, त्वया सुवर्णं महत्तमं गणितम्। वस्तुतः तत् तुच्छम्। उद्यानात् जलमानय। तेन जलेन सिक्तानि वस्तूनि पूर्वामवस्थां स्वीकरिष्यन्ति।" इत्युक्त्वा मुनिः तत्रैवान्तर्हितः।

मायादासः उद्यानात् जलमानयत्। सौवर्णानि वस्तूनि तेन जलेन सिक्तानि स्वां-स्वां प्रकृतिं प्राप्तानि। राजकुमार्यपि मन्दं हसन्ती पितुः मानसमतोषयत्।

अतिलोभो न कर्तव्यः, स तु दुःखस्य कारणम्।

शब्दार्थ

लुब्धः	लोभी
स्पृश्यमानाः	छुए जाते हुए
अङ्के	गोद में
अन्तर्हितः	छिप गया

अभ्यास

1. **संस्कृत में उत्तर दो—**

(क) मायादासः कीदृशः भूपतिः आसीत् ?

(ख) मायादासेन सत्कृतः सन्तुष्टः मुनिः किमवदत् ?

(ग) वरं लब्ध्वा मायादासः प्रथमं किमकरोत् ?

(घ) मायादासेन स्पृष्टानि वस्तूनि कीदृशानि जातानि ?

(ङ) मायादासेन स्पृष्टा मञ्जरी कीदृशी जाता ?

(च) सुतां समाश्वासयितुं मायादासः किमकरोत् ?

2. **उचित शब्द चुनकर वाक्य पूरा करो—**

(क) एकदा कोऽपि……मायादासस्य प्रासादमगच्छत् ।

(मुनिः, मुनी, मुनयः)

(ख) नृपतिः……मुनिं सत्कारेणातोषयत् । (सः, तं, तेन)

(ग) मुनिः अन्तर्हितः……। (अभवत्, अभवताम्, अभवन्)

(घ) ततः तस्य……पिपासा जाता । (महान्, महती, महत्)

(ङ) ……कुमारी मम जीवितम् । (अयम्, इयम्, इदम्)

3. **सन्धि-विच्छेद करो—**

स्वस्त्यस्तु, तत्रैव, इत्युक्त्वा, मुनिर्नैवम्, राजकुमार्यपि ।

4. **अपने वाक्यों में प्रयोग करो—**

अतीव, उच्चैः, नितराम्, कृपया, मृषा ।

5. **शुद्ध करो—**

(क) ते जीवितं नयति ।

(ख) पदार्थः सौवर्णः भवन्तु ।

(ग) तस्य पिपासा जातम् ।

(घ) मायादासः जलं आनयताम् ।

6. **निम्नलिखित रूपों में धातु, लकार, पुरुष और वचन बताओ—**

आगच्छत्, अभवत्, अवदत्, आनय, अयाचत् ।

दशमः पाठः

नद्यः

अस्माकं भारतदेशः अतीव विशालः अस्ति। अस्मिन् बहवः गिरयः सन्ति। तेषु केचन अत्युन्नताः केचन नात्युन्नताः। सर्वे

ते गिरयः मेघकलापं धृत्वा वृष्टिं सम्पादयन्ति । तेन अनेकाः नद्यः प्रवहन्ति। काश्चन पूर्वसमुद्रं प्रवहन्ति, इतराः पश्चिमसमुद्रम्। पुराणकालाद् आरभ्य सर्वे भारतीयाः नदीनां सत्कारं कुर्वन्ति। क्षेत्रेषु सलिलसेचनेन नद्यपि मातेव भवति । अत एव यानि क्षेत्राणि नदीजलेन प्लावितानि तानि नदीमातृकाणीति प्रसिद्धिः, यानि च वृष्टिजलेन सिक्तानि तानि देवमातृकाणि इति ।

वर्षाकाले अधिकेन वृष्टिपातेन नद्याः जलेन च ग्रामाः प्लाविताः भवन्ति। निर्धनानां मृत्तिकानिर्मितानि गृहाणि ध्वस्तानि भवन्ति । तेषां सम्पत्तिः च नश्यति । सर्वे एव प्लावनपीडितानाम् अन्न-वस्त्र-वासादिदानेन साहाय्यं कुर्वन्ति ।

येषु प्रदेशेषु अनावृष्टिकारणेन जलाभावात् कृषिः न प्रारभ्यते, तत्र शासनाधिकारिणः नद्याः जलं प्रतिरुध्य सेतुं बद्ध्वा महा-जलाशयान् निर्माय जल-सञ्चयं कुर्वन्ति। तेभ्यः जलाशयेभ्यः क्षेत्रेषु जलं वितरन्ति । अनेन तेषु प्रदेशेष्वपि सस्यं प्ररोहति, कृषीवलाः सम्पन्नाः सुखिनः च भवन्ति । यथा पञ्चनद-प्रदेशे भाखडा-नङ्गलः, आन्ध्र-प्रदेशे तुङ्गभद्रा बन्धः, केरल-प्रदेशे मलम्पुषः, कर्णाटक राज्ये कृष्णराजसागरः, तमिलनाडु प्रदेशे मेट्टूर-बन्धः— इति बहवः बन्धाः निर्मिताः। एभ्यः बन्धेभ्य. विद्युत् अपि उत्पादिता भवति। एषा जलमूला विद्युत् 'हाइड्रो इलेक्ट्रिक पावर' इति नाम्ना प्रसिद्धा। पश्यत! नद्यः देशस्य कीदृशमुपकारं कुर्वन्ति । अत एव जनाः ताः देवता-रूपेण पूजयन्ति । स्व-स्व गृहेषु स्नान-समये अधुनापि सर्वासां नदीनां सान्निध्यं स्नान-जले प्रार्थयन्ति।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

शब्दार्थ

प्लावितानि	डूब गए
निर्माय	बना कर
ध्वस्तानि	नष्ट हो गये
अत्युन्नताः	अधिक ऊँचे
नात्युन्नताः	जो अधिक ऊँचे नहीं (अर्थात् कम ऊँचे)

अभ्यास

1. **संस्कृत में उत्तर दो—**

   (क) अस्माकं देशः कीदृशः ?

   (ख) नद्यः कुतः वहन्ति ?

   (ग) जलप्लावनेन का हानिः भवति ?

   (घ) महाजलाशयानां को लाभः ?

2. **निम्नलिखित सर्वनाम पदों के मूल रूप तथा उनके वचन, लिंग और विभक्ति लिखो—**

   अस्माकम्, अस्मिन्, तेषु, सर्वे, तेन, तासाम्, अनेन, एभ्यः, ताः ।

3. **निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो—**

   गिरिः, मेघः, सागरः, बन्धः, स्नानम्, नदी ।

4. **'अ', 'आ' और 'इ' में से एक-एक शब्द चुनकर अधिक से अधिक वाक्य बनाओ—**

अ	आ	इ
गिरयः	उपयोगिनः	सन्ति
नद्यः	जनान्	भवन्ति
बन्धः	अत्युन्नताः	उपकुर्वन्ति

5. **निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखो—**

नदी, जलम्, समुद्रः, पर्वतः ।

6. **निम्नलिखित शब्दों के सामने सन्धि-विच्छेद दिए हैं । शब्दों के सही सन्धि-विच्छेदों को चुनकर लिखो—**

(क) अत्युन्नताः	नदी	+	अपि
(ख) प्रदेशेष्वपि	अधुना	+	अपि
(ग) अधुनापि	प्रदेशेषु	+	अपि
(घ) नद्यपि	अति	+	उन्नताः

7. **संस्कृत में अनुवाद करो—**

(क) हमारे देश में बहुत पर्वत हैं ।

(ख) पर्वत बहुत ऊँचे हैं ।

(ग) मेघ वर्षा करते हैं ।

(घ) अधिक वर्षा से बाढ़ आ जाती है ।

(ङ) बाढ़ से गाँव नष्ट हो जाते हैं ।

एकादशः पाठः

चाणक्यनीतिः

शान्तितुल्यं तपो नास्ति न सन्तोषात्परं सुखम् ।
न तृष्णायाः परो व्याधिर्न च धर्मो दयापरः ॥ 1 ॥

दृष्टिपूतं न्यसेत्पादं वस्त्रपूतं जलं पिबेत् ।
शास्त्रपूतं वदेद् वाक्यं मनःपूतं समाचरेत् ॥ 2 ॥

तावद् भयाद्धि भेतव्यं यावद् भयमनागतम् ।
आगतं तु भयं दृष्ट्वा नरः कुर्याद् यथोचितम् ॥ 3 ॥

माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः ।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा ॥ 4 ॥

रूपयौवनसम्पन्ना विशालकुलसम्भवाः ।
विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः ॥ 5 ॥

शब्दार्थ

तृष्णा	लालच
न्यसेत्	रखना चाहिए
निर्गन्धाः	गन्धहीन
किंशुकाः	टेसू (पलाश का फूल)

अभ्यास

1. **संस्कृत में उत्तर दो—**
   (क) वस्त्रपूतं किं पिबेत् ?
   (ख) निर्गन्धा किंशुकाः इव के शोभन्ते ?
   (ग) भयं दृष्ट्वा नरः किं कुर्यात् ?
2. **निम्नलिखित शब्दों का लिंग, वचन और विभक्ति बताओ—**
   सन्तोषात्, तृष्णायाः, भयम्, माता ।

द्वादशः पाठः

लवकुशौ

श्रीरामः अयोध्यायाः नरपतिः आसीत् ।
तस्य द्वौ पुत्रौ अभवतां– लवः कुशः चेति ।

बाल्यावस्थायां किल तौ स्वजनन्या सीतया सह वाल्मीकेः आश्रमे अवसताम्। तत्र च गुरोः वाल्मीकेः सकाशात् रामायणम् अपठताम्। तत्र वटुभिः सह अक्रीडताम्। गुरोः अनुशासने अतिष्ठताम्।

एकदा श्रीरामः अश्वमेधयागम् अकरोत्। तदा दिग्विजयाय अश्वम् अमुञ्चत्। ततः एका विशाला सेना अश्वम् अन्वगच्छत्। लक्ष्मणस्य पुत्रः चन्द्रकेतुः सेनायाः नायकः आसीत्। यावत् तुरगः आश्रममार्गेण अगच्छत् तावत् लवकुशौ तम् अपश्यताम्। कौतुकेन तं गृहीत्वा आश्रमम् अनयतां च। अनन्तरम् अश्वरक्षकः चन्द्रकेतुः तत्रागत्य तौ अकथयत्— "शीघ्रं त्यजतं एतं श्रीरामस्य यागाश्वम् अथवा मया सह युद्धं कुरुतम्।" बालौ अवदतां— "वीराः! वयं वाल्मीकिशिष्याः निर्भयाः च। न कस्यापि प्रभुत्वं सोढुं शक्नुमः। न त्यजामः अश्वं, युद्धाय सज्जाः भवत।" ततः उभयोः मध्ये युद्धम् अभवत्। युद्धे च लवकुशौ लीलयैव चन्द्रकेतुम् अजयताम्। इदं ज्ञात्वा लक्ष्मणः तत्रागच्छत्। तौ तमपि अजयताम्। अन्ते श्रीरामः स्वयं तत्रागच्छत्, अवदत् च— "भोः बालकौ, शीघ्रं त्यजत एनम् अश्वम्। तद्वचनमपि अमन्यमानौ तौ तेनापि सह युद्धाय उद्यतौ अभवताम्। अत्रान्तरे शिष्यैः निवेदितः महर्षिः वाल्मीकिः ससंभ्रमं तत्रागत्य युद्धात् तौ न्यवारयत्। परस्परं परिचयम् अकारयत् च। लवकुशौ श्रीरामस्य पादयोः अपतताम्। श्रीरामः अपि सुतौ परिष्वज्य नितराम् अतुष्यत्।

शब्दार्थ

अमुञ्चत्	छोड़ा, छोड़ दिया
अन्वगच्छत्	पीछे गया

सोढुम्	सहन करने के लिए
उद्यतौ	तैयार हुए

अभ्यास

1. **संस्कृत में उत्तर दो—**
   (क) लवकुशौ कौ आस्ताम् ?
   (ख) तौ कस्य आश्रमे अवसताम् ?
   (ग) अश्वमेधयज्ञं कः अकरोत् ?
   (घ) युद्धे लवकुशौ कं कम् अजयताम् ?

2. **निम्नलिखित वाक्यों में से कर्ता, कर्म और क्रिया पद छाँटो—**
   (क) तदा सः दिग्विजयाय अश्वम् अत्यजत् ।
   (ख) चन्द्रकेतुः तत्रागत्य तौ अकथयत् ।
   (ग) युद्धे च लवकुशौ लीलयैव चन्द्रकेतुम् अजयताम् ।
   (घ) श्रीरामः सुतौ परिष्वज्य अतुष्यत् ।
   (ङ) तत्रागत्य वाल्मीकिः तौ युद्धात् न्यवारयत् ।

3. **निम्नलिखित शब्दों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग करो—**
   यावत्, लीलया, शीघ्रम्, परस्परम्, परिष्वज्य, सह, सोढुम्, ज्ञात्वा ।

4. **कोष्ठक में दिए गए क्रियापदों में से उपयुक्त क्रियापद चुनकर रिक्त स्थान भरो—**
   (क) श्रीरामः सुतौ परिष्वज्य……। (अतुष्यत्, अतुष्यन्)
   (ख) तस्य द्वौ पुत्रौ……। (अभवत्, अभवताम्)
   (ग) लवकुशौ लीलयैव चन्द्रकेतुम्……। (अजयाव, अजयताम्)
   (घ) चन्द्रकेतुः तत्रागत्य तौ……। (अकथयम्, अकथयत्)

5. **सही उत्तर पर (✓) चिह्न लगाओ—**

(क) च+इति = चैति/चेति।

(ख) कस्य+अपि = कस्यापि/कस्यपि।

(ग) लीलया+एव = लीलयेव/लीलयैव।

(घ) नि+अवारयत् = निवारयत्/न्यवारयत्।

6. **निम्नलिखित का धातु, लकार, पुरुष तथा वचन बताओ—**

आसीत्। अनयत्। अकरोत्। अभवत्। भवत।

7. **संस्कृत में अनुवाद करो—**

(क) दशरथ अयोध्या के राजा थे।

(ख) उनके चार पुत्र थे।

(ग) श्रीराम और लक्ष्मण वन गए।

(घ) भरत और शत्रुघ्न ने राज्य का प्रबंध किया।

(ङ) श्रीराम के दो पुत्र थे।

(च) लक्ष्मण के पुत्र का नाम चन्द्रकेतु था।

त्रयोदशः पाठः

महेश्वरस्य पत्रम्

केन्द्रीयविद्यालयः
वाराणसीतः
26-6-80

प्रियमित्र,

सस्नेहं निवेदयामि ।

अत्र कुशलं, तत्राप्यस्तु । अपरं च अस्माकं विद्यालये संस्कृतविश्वविद्यालयात् कश्चन आचार्यः आगतः । सः अस्माकं विद्यालयं दृष्ट्वा अतीव हृष्टः । गौरवान्विता तस्य भव्या आकृतिः अद्यापि मम मनसि उल्लिखिता भवति । तस्य भाषणं अस्मभ्यम् अतीव लाभप्रदम् आसीत् । त्वं मम मित्रम् इति कृत्वा तस्य भाषणस्य सारमात्रं लिखामि ।

'प्रातः उत्थातव्यम् । उत्थाय च ईश्वरः स्मरणीयः । ततः मातापितरौ च वन्दनीयौ । ततः परं नित्यकर्म कृत्वा दुग्धं पातव्यम्, फलानि भोक्तव्यानि, यतः धेनोः क्षीरं शरीरं पोषयति बुद्धिं च वर्धयति । पत्रपुष्पफलालङ्कृतैः वृक्षैः सुशोभिते दूर्वामये उद्याने अटनीयम् । तत्र शीतगन्धपूर्णः वायुः आरोग्यप्रदो भवति । यदि तत्र

कश्चित् व्यायामं करोति अथवा प्राणायामं साधयति, सः निःसंशयं दीर्घायुः भवति।'

अपि च तेनोक्तं यत् छात्रैः न केवलं स्वपाठ्यपुस्तकानि पठितव्यानि, किन्तु रामायण-कुरान्-बाइबिलादिधर्मग्रन्थाः अपि अध्येतव्याः, यतः एतेषाम् अध्ययनेन बुद्धिः मनः च विस्तृते विकसिते च भवतः। सर्वैः छात्रैः प्रतिदिनं दैनन्दिनी लेखितव्या। अध्ययने इतरपुस्तकपठने च सुभाषितानि सङ्ग्रहीतव्यानि।

एवं बहु तेन श्रोतव्यं ज्ञातव्यं च कथितम्। अद्यारभ्य अहं तदेव अनुसरामि। त्वयापि एते उपदेशाः अनुसर्तव्याः इति मम आशयः।

स्वगुरुभ्यः मम प्रणामाः निवेदनीयाः।

पत्रम् असकृत् लेखितव्यम्।

इति शम्।

श्री अनन्तार्यस्य सूनोः
श्री गोपालकृष्णस्य सविधे.
4, उत्तरचित्रावीथिः,
श्रीरङ्गम्,
त्रिशिरःपुरम्-6

त्वदीयः
महेश्वरमित्रः

शब्दार्थ

कश्चन	कोई
हृष्टः	प्रसन्न
अस्मभ्यम्	हम लोगों के लिए
उत्थाय	उठ कर
अनुसर्तव्याः	अनुसरण करना चाहिए (अनुसरण करने योग्य)

अभ्यास

1. **संस्कृत में उत्तर दो—**
   (क) पत्रमिदं कः कस्मै लिखति ?
   (ख) महेश्वरमित्रस्य विद्यालये कः आगतः ?
   (ग) प्रातः उत्थाय प्रथमं किं कर्तव्यम् ?
   (घ) किमर्थं दुग्धं पातव्यम् ?
   (ङ) प्रातः कुत्र अटनीयम् ?
   (च) छात्रैः किं किं पठितव्यम् ?
2. **वाक्यों में प्रयोग करो—**
   अपि, यदि—तर्हि, किन्तु ।
3. **'अ' और 'आ' में से एक-एक पद चुन कर उपयुक्त वाक्य बनाओ—**

अ	आ
(क) पुस्तकम्	पातव्यम्
(ख) दुग्धम्	भोक्तव्यानि
(ग) मातापितरौ	पठितव्यम्
(घ) ईश्वरः	लेखितव्या
(ङ) दैनन्दिनी	वन्दनीयौ
(च) फलानि	स्मरणीयः

4. **सन्धि करो—**
   अद्य + अस्माकम्, भव्या + आकृतिः,
   मनसि + उल्लिखिता, अपि + अध्येतव्याः ।
5. **सन्धि-विच्छेद करो—**
   तत्राप्यस्तु, अद्यापि, तेनोक्तम् ।
6. **शुद्ध करो—**
   (क) अहं सारमात्रं लिखति ।
   (ख) क्षीरं शरीरं पोषयन्ति ।
   (ग) क्षीरं बुद्धिं नाशयन्ति ।
   (घ) छात्रैः पाठ्यपुस्तकानि पठितव्या ।

चतुर्दशः पाठः

नीतिमान् बालः

कुसुमितैः तरुभिः रमणीयः वनोद्देशः। चतुर्दशवर्षीयः कश्चन बालः कस्यचन तरोः अधः शिलातले उपविष्टः आसीत्। तं परितः केचन जनाः अतिष्ठन्। तदा केचन भटाः कमपि पुरुषं बद्ध्वा तत्रानयन्। ते च कुमारं भक्त्या प्रणम्य अवदन्— "कुमार! अयं कश्चन ग्रामाधिकृतः नीत्या धर्मेण च जनान् पालयितुं नियुक्तः, किन्तु अयं तान् पीडयति। अयं ह्यः कामप्यनाथां विधवां कारणं विना अपीडयत्। न मे कुमारात् भीतिः इति मतिः अस्य। अतः इमं बद्ध्वा इहानयामः"।

बालः अपृच्छत्— "भोः किं एतत् सत्यम्?" बद्धः पुरुषः तूष्णीमतिष्ठत्। बालः पुनरप्यकथयत्— "तवेयं मतिः नोचिता। ये जनान् पीडयन्ति ते मम रिपवः। अधुना त्वमपि मम रिपुः। रिपोः नाशः मम परमः धर्मः। नृपतीनामियं नीतिः। तव अधर्मे रुचिः सञ्जाता। त्वमपराधमकरोः। अतः त्वं दण्डनीयः असि। भोः भटाः, इमं दण्डयत।"

बालस्य नीतौ धर्मे च निष्ठां विलोक्य तत्र स्थिताः सर्वे

जनाः विस्मिताः अभवन् । "धन्याः वयं येषां नायकः दीनेषु दयालुः नीतिनिष्ठः च" इत्युच्चैः अकथयन् ।

अयमेव बालः पश्चात् 'शिवाजी महाराजः' इति प्रसिद्धः अभवत् । तस्योज्ज्वला कीर्तिः सर्वासु दिक्षु प्रसृता अस्ति । तस्य देशभक्तिः अस्माभिः अनुकरणीया । तस्य शौर्यकथाः अद्यापि अस्मासु उत्साहं प्रीतिं च वर्धयन्ति ।

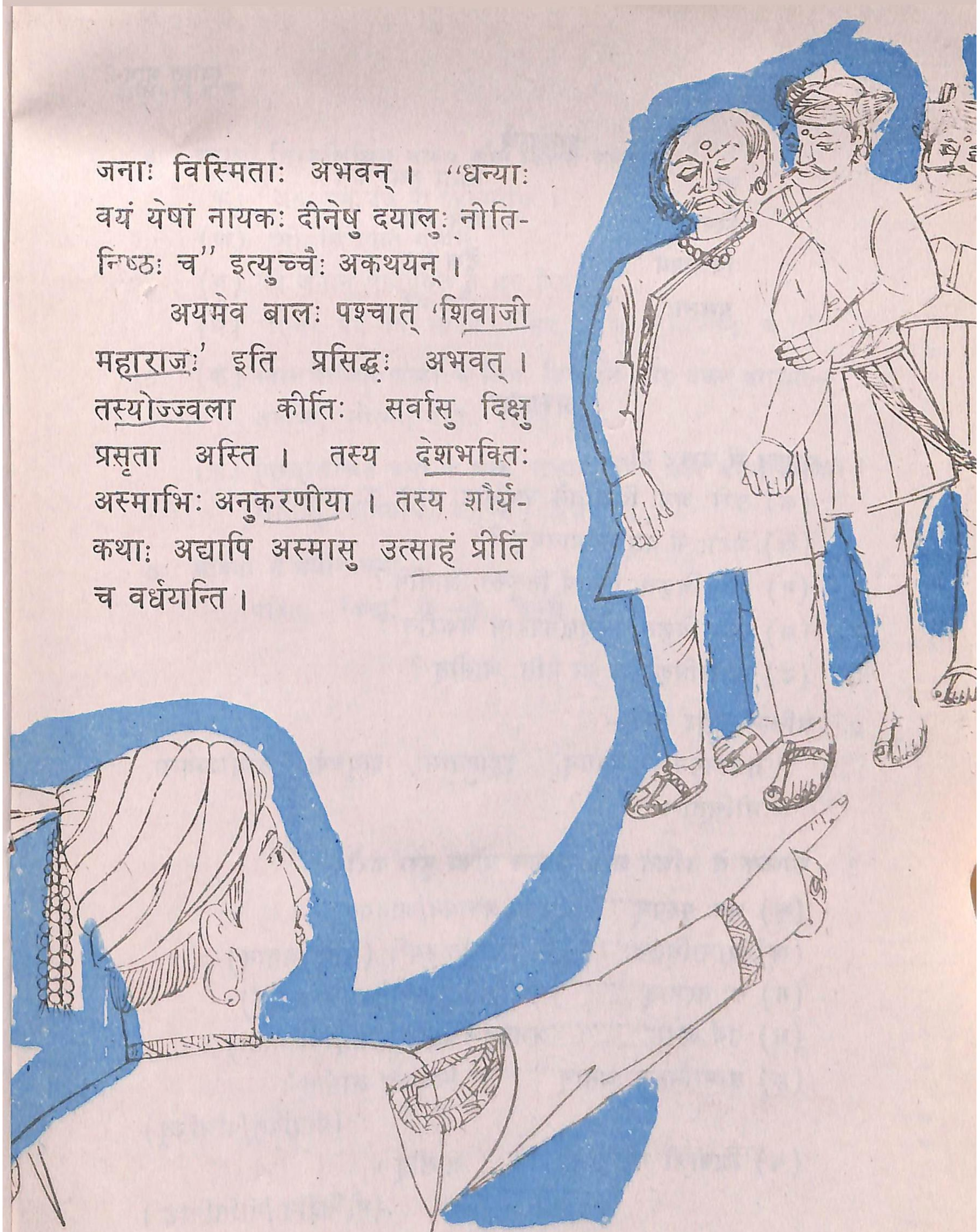

शब्दार्थ

ह्यः	बीता हुआ कल
रिपवः	शत्रु गण
विलोक्य	देख कर
प्रसृताः	फैल गई

अभ्यास

1. **संस्कृत में उत्तर दो—**
   (क) तरोः अधः शिलातले उपविष्टः बालः कः आसीत् ?
   (ख) भटाः कं बद्ध्वा आनयन् ?
   (ग) ग्रामाधिकृतः किमर्थं नियुक्तः आसीत् ?
   (घ) ग्रामाधिकृतः कीदृशमपराधं अकरोत् ?
   (ङ) ग्रामाधिकृतस्य का मतिः आसीत् ?

2. **सन्धि-विच्छेद करो—**
   तत्रानयन्, तवेयम्, इहानयामः, इत्युच्चैः, तस्योज्ज्वला, नोचिता ।

3. **कोष्ठक से उचित शब्द चुनकर वाक्य पूरा करो—**
   (क) भटः पुरुषम्............। (अनायन्/आनयत्)
   (ख) ग्रामाधिकृतः............पीडयति स्म। (जनाः/जनान्)
   (ग) सः तस्मात्............भवति । (दण्डनीयः/दण्डनीया)
   (घ) सर्वे जनाः............अभवन् । विस्मितयोः/विस्मिताः)
   (ङ) ग्रामाधिकृतः जनान्............नियुक्तः आसीत् ।
   (पीडयितुं/पालयितुं)
   (च) शिवाजी महाराजः ....आसीत् ।
   (नीतिहीनः/नीतिनिष्ठः)

4. **बताओ निम्नलिखित वाक्य कौन किससे कहता है ?**

(क) "अतः इमं बद्ध्वा इहानयामः ।"

(ख) "भोः किं एतत् सत्यम् ?"

(ग) "ये जनान् पीडयन्ति ते मम रिपवः ।"

(घ) "धन्याः वयं येषां नायकः दीनेषु दयालुः नीतिनिष्ठः च ।"

5. **(क) निम्नलिखित शब्दों के लिंग, विभक्ति और वचन बताओ—**

तरुभिः, नीत्या, मतिः, रिपवः ।

(ख) निम्नलिखित रूपों के धातु, लकार, पुरुष और वचन बताओ-

आसीत्, आनयामः, अपृच्छत्, अभवत् ।

6. **वाक्यों में प्रयोग करो—**

परितः विना, ये—ते, उच्चैः ।

पञ्चदशः पाठः

द्वे मित्रे

एकदा गोपालः सुरेशेन सह उद्यानम् अगच्छत्। तौ तत्र द्वौ आम्रवृक्षौ अपश्यताम्। वृक्षयोः पक्वानि फलानि दृष्ट्वा लालायितौ अभवताम्। उद्यानपालकम् उपेत्य तौ अपृच्छताम्— "भद्र, आम्राणां किं मूल्यम्?" सः प्रत्यवदत्— "त्रिभिः रूप्यकैः पञ्चाशत् फलानि यच्छामि।"

गोपालः अचिन्तयत्— 'अद्यास्माकं गृहे चत्वारः अतिथयः आगताः। तेषाम् आतिथ्यं प्रभूतैः स्वादुव्यञ्जनैः कर्तव्यम्। घृतदधिशर्करादिभिः समृद्धैः भोजनैः सह फलान्यपि सन्तु। अतः शतं फलानि क्रेतुम् इच्छामि।' ततः सः उद्यानपालकम् अवदत्— "यच्छतु भवान् षड्भिः रूप्यकैः शतं फलानि।" सुरेशेन केवलं पञ्चविंशतिः फलानि क्रीतानि।

अथ तौ शताधिकानि आम्राणि वोढुं असमर्थौ मार्गं एकं यानम् अवलोक्य वाहकम् अपृच्छताम्— "अस्मात् स्थानात् आदर्शनगरं यावत् कियत् भाटकं भविष्यति?" वाहकः प्रत्यवदत्— "आदर्शनगरम् अतिदूरम् अस्ति। भाटकम् अष्ट रूप्यकाणि।"

सुरेशः अभणत्— "अधुना नव-वादन-समयः अस्ति। होरार्धेन तत्र गन्तुं शक्नुवः न वा, यतः दश-वादन वेलायां विद्यालये ममोपस्थितिः अनिवार्या अस्ति। अतः यानेनैव गन्तव्यम्।"

एवं विचार्य पुनः वाहकम् अपृच्छत्— "भद्र, आवां चत्वारि रूप्यकाणि एव दातुं शक्नुवः। कृपया वाहयतु भवान्।" तयोः स्थितिं ज्ञात्वा वाहकोऽपि दयालुस्सन् चतुर्भ्यः रूप्यकेभ्यः तौ वाहयितुम् उद्यतः अभवत्।

तथैव द्वौ अपि याने आसीनौ स्वस्वगृहं प्राप्तौ। गोपालस्य पितरौ स्वपुत्रस्य मतिं प्रशंसतः स्म। यदा सुरेशः फलानि नीत्वा स्वगृहं प्रविष्टः तदा तस्य माता सहर्षम् अवदत्— "पुत्र! शोभनं कृतम्।"

शब्दार्थ

लालायितुम्	ललचाने के लिए
वोढुम्	ढोने के लिए
वाहकम्	चालक, ड्राइवर
याने	गाड़ी में।

अभ्यास

1. संस्कृत में उत्तर दो—

(क) गोपालः सुरेशेन सह कुत्रागच्छत्?

(ख) तौ तत्र किम् अपश्यताम्?

(ग) गोपालः किमर्थं फलानि क्रेतुम् इच्छति स्म?

(घ) गोपालः कति फलानि क्रेतुम् अभिलषति स्म?

2 **सन्धि-विच्छेद करो—**

अद्यास्माकम्, फलान्यपि, तथैव, ममोपस्थितिः, यानेनैव।

3. **रिक्त स्थानों की पूर्ति संख्यावाची शब्दों से करो—**

(क) तौ तत्र............आम्रवृक्षौ अपश्यताम् ।

(ख) अद्यास्माकं गृहे............अतिथयः आगताः ।

(ग) अहं............फलानि क्रीत्वा गृहं गच्छामि ।

4. **अनुवाद करो—**

(क) राम ने चार पुस्तकें खरीदनी चाहीं ।

(ख) मेरे घर पर दस अतिथि आये ।

(ग) हमारी कक्षा में पचास छात्र हैं ।

(घ) मुझे तीन फल दो ।

(ङ) मेरे हाथ में दो फूल हैं ।

षोडशः पाठः

कन्याकुमारी

भारते बहूनि दर्शनीयानि तीर्थस्थानानि सन्ति । तेषु अतिरमणीयं पावनं च तीर्थस्थानं कन्याकुमारी नाम । तत् तीर्थस्थानं भारतस्य दक्षिणे कोणे तिष्ठति ।

देव्याः कन्याकुमार्याः सान्निध्येन पावनमिदं तीर्थस्थानम् । आरबभारतसमुद्राभ्यां परिवृतेदं स्थानं रमणीयं विराजते ।

तत्र सूर्यस्योदयः सूर्यास्तं च नितरां दर्शनीये । पूर्णिमायां तिथौ सायं पूर्वस्यां दिशायां चन्द्रोदयः, पश्चिमायां सूर्यास्तं च युगपद् द्रष्टुं शक्यते ।

तत्र समुद्रतीरं नानावर्णैः सिकताकणैः आकीर्णं मनोहरं भवति । समुद्रमध्ये तीरात् नातिदूरस्थिते शिलातले निर्मितं स्वामिविवेकानन्दस्मारकं मण्डपं द्रष्टव्यम् । तत् मण्डपं नौकया प्राप्यं भवति । लोककल्याणाय प्रवृत्ताः स्वामिविवेकानन्दाः सादरं स्मरणीयाः । तेषां सन्देशाः अध्येतव्याः श्रोतव्याः च ।

तत्र समुद्रे स्नातव्यम्, देवीमन्दिरं गन्तव्यम् । सायं समुद्रतीरे शीतो वायुः सेव्यः । ततः नानावर्णाः सिकताकणाः सम्पादनीयाः । भारतस्य नानाभागेभ्यः समागतैः सज्जनैः सङ्गतिः परस्परम् एकता भावना च वर्धनीया ।

शब्दार्थ

पावनम्	पवित्र
परिवृता	घिरी हुई
युगपद्	एक साथ
सिकता	बालू का कण

अभ्यास

1. **संस्कृत में उत्तर दो—**
   (क) कन्याकुमारी कीदृशं स्थानं भवति ?
   (ख) कन्याकुमारी कुत्र तिष्ठति ?
   (ग) कस्यां तिथौ सूर्यास्तं चन्द्रोदयः च युगपद् द्रष्टुं शक्यौ ?
   (घ) स्वामिविवेकानन्दस्मारकं मण्डपं कुत्रास्ति ?
   (ङ) तत् शिलातलं कथं गन्तव्यम् ?

2. **सन्धि-विच्छेद करो—**
   तेष्वन्यतमम्, परिवृतेयम्, सूर्यस्योदयः ।

3. **कृ-कार्यः** (यत् प्रत्यय), **करणीयः** (अनीयर् प्रत्यय) **कर्तव्यः** (तव्य प्रत्यय)
   इसी प्रकार निम्नलिखित धातुओं के तीन-तीन रूप लिखो—
   स्मृ, गम्, दृश् ।

4. **उचित शब्द चुनकर वाक्यों को पूरा करो—**
   (क) समुद्रतीरे……सिकताकणाः सन्ति । (नानावर्णः, नानावर्णा, नानावर्णाः)
   (ख) सदा सज्जनैः समागमः……। (कर्तव्यम्, कर्तव्यः, कर्तव्या)
   (ग) प्रशस्तानि……अध्येतव्यानि । (पुस्तकानि, ग्रन्थाः)
   (घ) ……स्वामिविवेकानन्दाः प्रातःस्मरणीयाः । (अस्मभ्यम्, वयम्, अस्माभिः)

5. **शुद्ध करो—**
   (क) प्रातः वयं पाठाः पठितव्याः ।
   (ख) बालाः पितृचरणौ वन्दनीयाः ।
   (ग) गुरूपदेशाः सर्वदा अनुष्ठेयः ।
   (घ) गृहमागतमतिथिं सत्कर्तव्यम् ।

6. **'अस्माभिः अश्वः आरोहणीयः' इस वाक्य में 'अश्व' के स्थान पर निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग करके अलग-अलग वाक्य बनाओ—**
   नौका, शकटम्, वृक्षौ, गजाः ।

सप्तदशः पाठः

न गङ्गदत्तः पुनरेति कूपम्

गङ्गाम् उभयतः विविधैः वृक्षैः सुशोभिताः ग्रामाः आसन्। तत्र एकस्मिन् ग्रामे एकः जीर्णः कूपः आसीत्। तस्मिन् कूपे मण्डूकानाम् अधिपतिः गङ्गदत्तः परिजनैः सह निवसति स्म। सः गङ्गदत्तः विनैव परिश्रमं प्रभुत्वं प्राप्नोत्। अतः गर्वितः अभवत्। तस्य दुर्व्यवहारेण केचित् प्रमुखाः भेकाः रुष्टाः जाताः। ते गङ्गदत्तम् अधिकारेण हीनं कृत्वा कूपात् बहिः कर्तुम् उद्यताः अभवन्। तद् ज्ञात्वा गङ्गदत्तः विषादम् अनुभवति स्म। 'शत्रूणां नाशः कथं भवेत्' इति एकान्ते चाटुकारैः सह मन्त्रणाम् अकरोत्। एकः नष्टबुद्धिः नाम मण्डूकः नत्वा अकथयत्— "नीतिं विना किमपि न सिद्ध्यति। शत्रुः शत्रुणा नाशयितव्यः इति नीतिः। एषां शत्रूणां नाशाय सर्पः सहायकः भविष्यति। एवं युद्धेन विनैव शत्रुनाशः भविष्यति।"

ततः मूढः गङ्गदत्तः कूपात् बहिः आगत्य सर्पस्य समीपं गतः। सः सादरं सर्पम् अवदत्— "नागराजाय नमः।" विषधरः अवदत्— "स्वागतं सखे। किं ते प्रियं करवाणि। किमर्थं आगतः

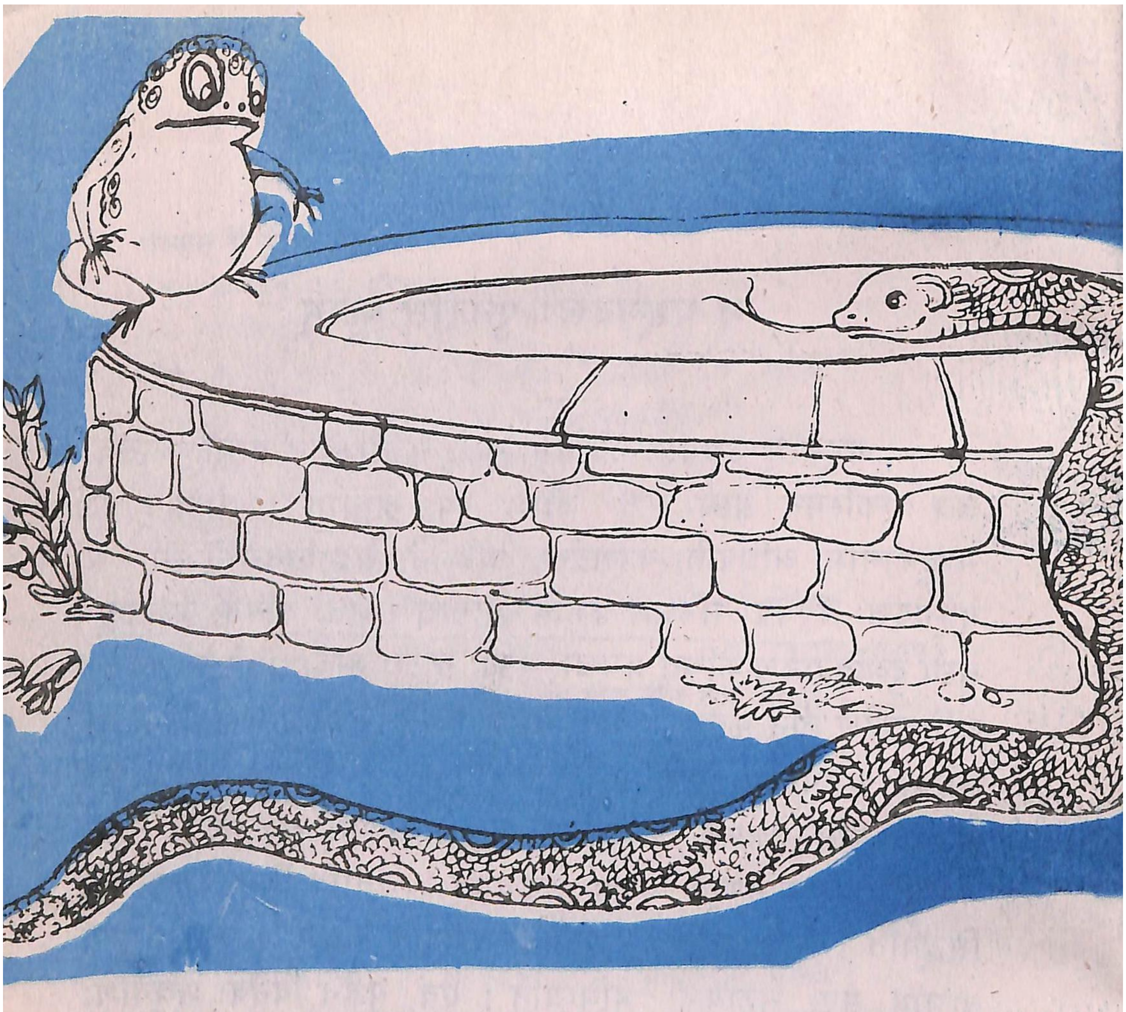

असि ?" गङ्गदत्तः अवदत्– "त्वया सह मैत्रीं कर्तुं तव द्वारम् उपागतः ।" सर्पराजः तम् अपृच्छत्– "भक्ष्यभक्षकयोः मध्ये कीदृशी मैत्री ?" गङ्गदत्तः अकथयत्– "सत्यम्, परम् अधुना अपमानितः अहं तव साहाय्यम् अभिलषामि ।"

'कस्मात् ते परिभवः ?'

'स्वजनेभ्यः ।'

"क्व ते निवासः, वाप्यां, कूपे तडागे वा ?"

"कूपे । आगच्छ मया सह, कूपं प्रविश्य मम शत्रून् नाशय ।"

ततः सर्पराजः तस्य वचनं स्वीकृत्य अकथयत्– "अलं चिन्तया । अन्धः अस्मि ! मां कूपं नय ।" तदा तत्र गत्वा गङ्गदत्तः

तस्मै प्रतिदिनं एकैकं मण्डूकं भोजनाय प्रयच्छति स्म । क्रमशः सः सर्पः सर्वान् भेकान् अभक्षयत् अकथयत् च— "बुभुक्षितः अस्मि । प्रयच्छ मे अन्यत् भोजनम् ।" गङ्गदत्तः अवदत्— "मार्गं प्रयच्छ येन बहिः गत्वा अन्यस्मात् जलाशयात् मण्डूकान् आनेष्यामि ।" ततः सर्पः तस्मै मार्गम् अयच्छत् । गङ्गदत्तः बहिः आगत्य सोल्लासम् अवदत्—

न गङ्गदत्तः पुनरेति कूपम् ।

शब्दार्थ

गर्वितः	घमण्डी
उपागतः	पहुँचा, पाया
आगत्य	आकर
सोल्लासम्	प्रसन्नतापूर्वक
आनेष्यामि	ले आऊँगा

अभ्यास

1. **संस्कृत में उत्तर दो—**

(क) गङ्गदत्तः कः आसीत् ?

(ख) कुतः केचित् भेकाः रुष्टाः अभवन् ?

(ग) गङ्गदत्तः सर्पराजं प्राप्य किमवदत् ?

(घ) गङ्गदत्तः कुतः सर्पेण सह मैत्रीं कर्तुमभिलषति स्म ?

(ङ) गङ्गदत्तः सर्पराजं कूपं नीत्वा किमकरोत् ?

(च) सर्पराजः कुतः गङ्गदत्ताय बहिः गन्तुं मार्गमयच्छत् ?

(छ) बहिर्गतः गङ्गदत्तः सोल्लासं किमवदत् ?

2. **(क) निम्नलिखित रूपों के लिंग, विभक्ति और वचन बताओ—**
एकस्मिन्, वाप्याम्, कस्मात्, चिन्तया ।
(ख) निम्नलिखित के मूल रूप लिखो—
नागराजाय, शत्रुणा, अन्यस्मात् ।
(ग) निम्नलिखित रूपों के धातु, लकार, पुरुष और वचन बताओ—
आनेष्यामि, सिद्ध्यति, अभिलषामि, आसन्, नय ।
(घ) निम्नलिखित धातुओं में 'तुमुन्' एवं 'क्त्वा' प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ—
गम्, कृ, दृश्, भू, नी ।

3. **वाक्यों में प्रयोग करो—**
बिना, सह, बहिः, अलम्, प्रयच्छति, नमः, सोल्लासम् ।

4. **निम्नलिखित वाक्यों को किसने किससे कहा है, बताओ—**
(क) शत्रुः शत्रुणा नाशयितव्यः ।
(ख) भक्ष्यभक्षकयोः मध्ये कीदृशी मैत्री ?
(ग) किं ते प्रियं करवाणि ?
(घ) कूपं प्रविश्य मम शत्रून् नाशय ।

5. **उचित शब्द चुनकर वाक्य पूरा करो—**
(क) ....उभयतः छायावृक्षाः भवन्ति । (मार्गम्, मार्गस्य, मार्गे)
(ख) वर्षाकाले.........बहिः गन्तुं न शक्यम् । (गृहस्य, गृहात्, गृहे)
(ग) ....सह गमनं न युक्तम् । (दुष्टेन, दुष्टस्य, दुष्टेभ्यः)

6. **संस्कृत में अनुवाद करो—**
(क) गङ्गदत्त के व्यवहार से कुछ प्रमुख मेंढक रुष्ट हो गए ।
(ख) उन्होंने गङ्गदत्त को पदच्युत करके कुएँ से बाहर निकालने का प्रयत्न किया ।
(ग) यह जानकर गङ्गदत्त को दुःख हुआ ।
(घ) उसने एकान्त में चाटुकारों के साथ सलाह की कि 'शत्रुओं का नाश कैसे हो' ।

अष्टादशः पाठः

विश्वासो नैव कर्तव्यो मधुरासु खलोक्तिषु

एकस्मिन् अरण्ये कश्चन सिंहः प्रतिवसति स्म। एकदा सः सुप्तः आसीत्। तदा एकः मूषकः तस्य केसरान् अकृन्तत्। प्रबुद्धः सिंहः स्वकेसरान् छिन्नान् अपश्यत्। सः अचिन्तयत्— "अहो, मम केसराः कृन्ताः। नूनं मूषकस्य कार्यमेतत्। किं करवाणि ? भवतु, एवं करिष्यामि। मार्जारः मूषकस्य शत्रुः, अतः कमपि मार्जारं पालयामि। सः मूषकं भक्षयिष्यति" इति।

सः सिंहः ग्राममगच्छत्। मार्गे कमपि मार्जारमपश्यत्। तस्य समीपं गत्वा सिंहः एवमवदत्— "भो मित्र मार्जार, मम गृहे कश्चन मूषकः प्रतिवसति। सः सुप्तस्य मम केसरान् कृन्तति, एतं निवारय। त्वं मया सह वस। अहं ते प्रभूतमाहारं दास्यामि" इति। मार्जारः अकथयत्— "यथा आदिशति भवान्। अहं त्वया सह वत्स्यामि।"

सिंहः मार्जारेण सह गुहामगच्छत्। तदा मार्जारः— 'मित्र, अहं क्षुधया पीडितः अस्मि। मह्यमाहारं प्रयच्छ' इत्यकथयत्। सिंहः तस्मै मांसादिकमयच्छत्। एवं मार्जारः तत्र सुखमवसत्।

मूषकः मार्जारात् भीतः बिलाद् बहिः नागच्छत्। अतः सिंहः अपि मूषकाद् भयं विना सुखेन कालमनयत्।

मूषकः बिलस्यान्तः आहारं विना क्षीणः अभवत्। क्षुधया पीडितः सः अचिन्तयत्— 'किं करवाणि ? आहारं विना कथं जीविष्यामि। यदि बिलाद् बहिः गच्छामि तर्हि मार्जारः मां भक्षयति। अतः अन्धकारे बहिः गत्वा आहारमन्विष्यामि' इति।

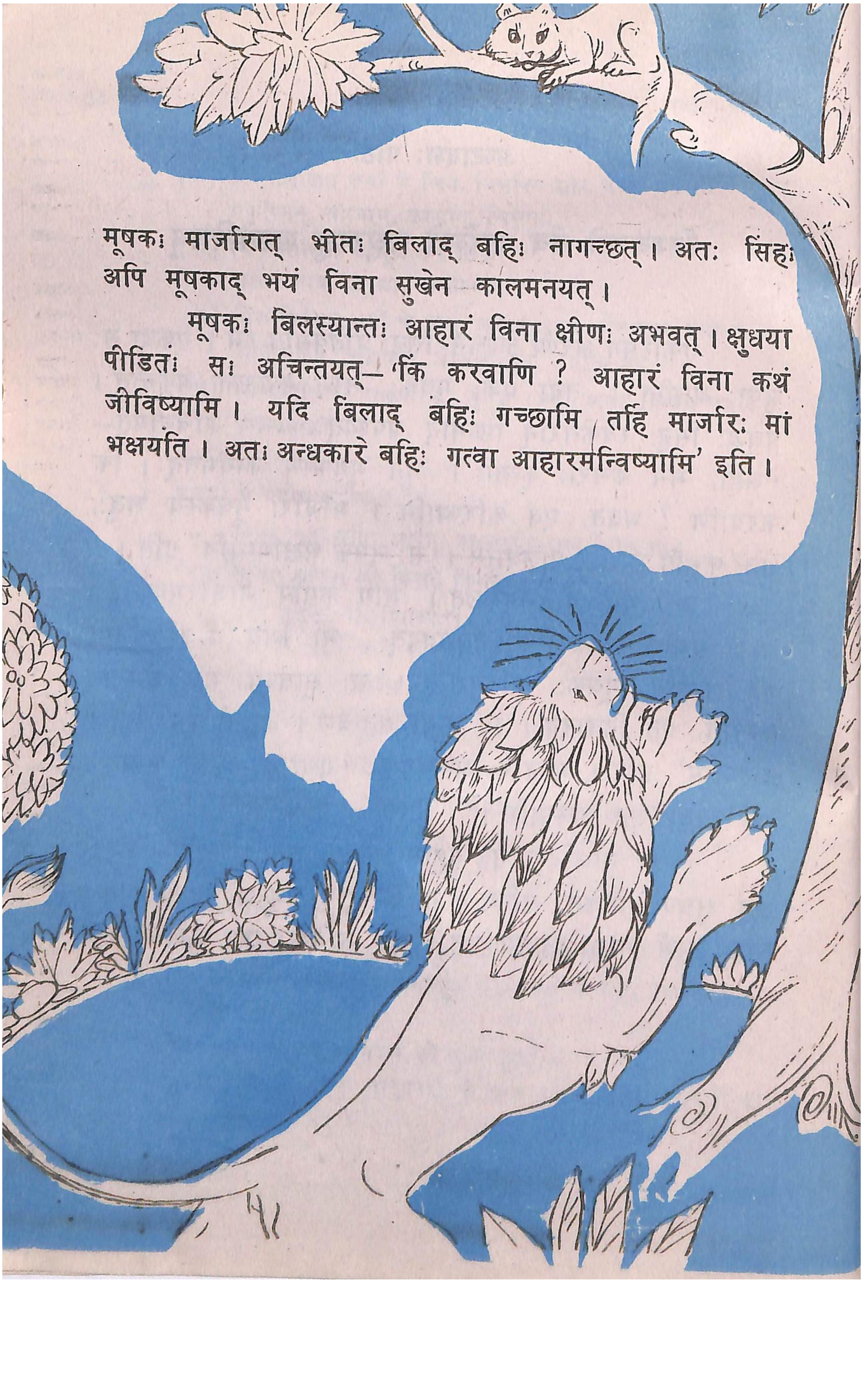

मूषकः रात्रौ बिलाद् निरगच्छत् । मार्जारः तमपश्यत् । सद्यः तं गृहीत्वा सिंहमवदत्— "भो मृगराज, पश्य तव शत्रुः अयं गृहीतः । अलमिदानीं चिन्तया । आवां सुखेन वसावः" इत्युक्त्वा खादति स्म ।

सिंहः अचिन्तयत्— 'इदानीमनेन मार्जारेण न मे प्रयोजनम् । अतःपरमस्मै भोजनं न दास्यामि' इति । ततःपरं सिंहः मार्जारायाहार नायच्छत् । एकदा क्षुधया पीडितः मार्जारः सिंहमकथयत्— "मित्र, भवान् स्ववचनं स्मरतु । मह्यमाहारं प्रयच्छतु" इति ।

सिंहः— "मूर्ख, त्वया न मे प्रयोजनम् । गच्छ यथेष्टम् । न किञ्चिदपि स्मरामि" ।

मार्जारः— "एवम् । अस्तु । कृतघ्न, महत्पापं करोषि यत्स्वयमेव कृतां प्रतिज्ञां विस्मरसि" ।

तदाकर्ण्य क्रुद्धः सिंहः मार्जारं हन्तुमुद्यतः । भीतः मार्जारः वृक्षमारुह्य अवदत्—

विश्वासो नैव कर्तव्यो मधुरासु खलोक्तिषु ।

शब्दार्थ

केसरान्	बालों को
अकृन्तत्	काट डाला
प्रभूतम्	पर्याप्त, अधिक
अन्विष्यामि	खोजूंगा
निरगच्छत्	बाहर निकाला

अभ्यास

1. **संस्कृत में उत्तर दो—**
   (क) सिंहः कुत्र प्रतिवसति स्म ?
   (ख) मूषकः किमकरोत् ?
   (ग) सिंहः किमर्थं मार्जारिमानयत् ?
   (घ) सिंहः कां प्रतिज्ञामकरोत् ?
   (ङ) मूषकः बिलात् बहिः कुतः नागच्छत् ?

2. **सन्धि-विच्छेद करो—**
   भक्षयिष्यतीति, इत्यकथयत्, नागच्छत्, बिलस्यान्तः, नैव, मार्जारायाहारम् ।

3. **कोष्ठकों में दिए शब्दों में से उचित शब्द द्वारा रिक्त स्थानों को पूरा करो—**
   (क) सः मार्गे कमपि.........अपश्यत् । (मार्जारं/मूषकं)
   (ख) सिंहः तस्मै.........अयच्छत् (मांसादिकम्/दुग्धम्)
   (ग) मूषकः आहारं विना.........अभवत् । (क्षीणः/स्थूलः)
   (घ) मूषकः रात्रौ बिलात्.........निरगच्छत् । (बहिः/अन्तः)

4. **अनुवाद करो—**
   (क) वह विद्यालय गया ।
   (ख) मैंने एक चित्र देखा ।
   (ग) पिता पुत्र को फल देगा ।
   (घ) सिंह मृग को खायेगा ।
   (ङ) चूहा डरकर बाहर नहीं गया ।

एकोनविंशः पाठः

वर्षाकालः

एकस्मिन् वर्षे द्वादशमासाः भवन्ति। सर्वेषु मासेषु भारते सर्वत्र एकविधमेव वातावरणं न भवति। क्वचित् अतीव शीतं भवति। क्वचित् च प्रचण्डः आतपः, कुत्रचित् न उष्णता न च शैत्यम्। कत्रचित् सर्वत्र जलमेव वयं पश्यामः। एतत्

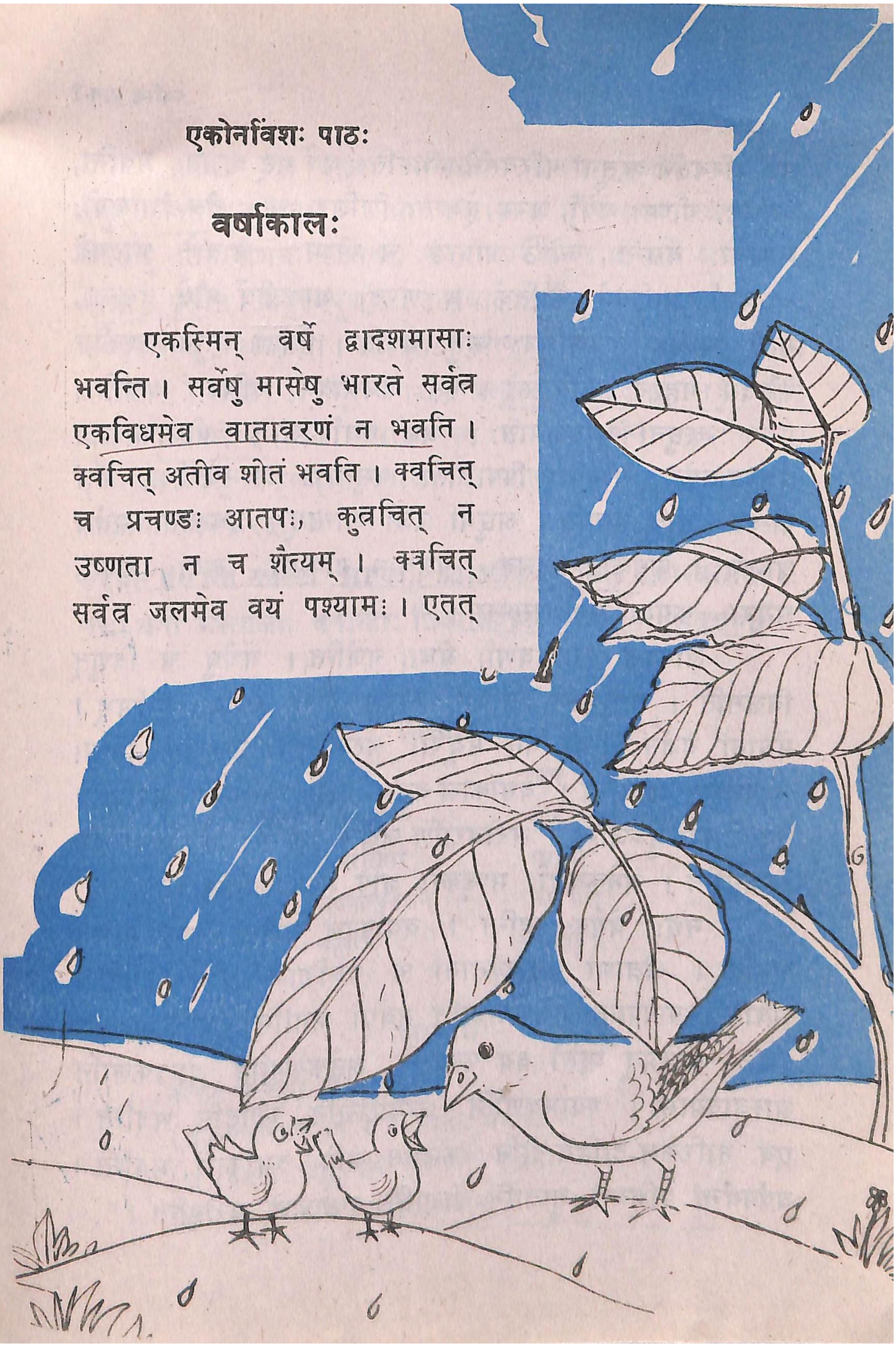

सर्वं परिवर्तनं ऋतूनां परिवर्तनेन भवति। वर्षे षट् ऋतवः भवन्ति, वसन्तः, ग्रीष्मः, वर्षा, शरद्, हेमन्तः, शिशिरः च। चैत्र-वैशाखयोः मासयोः वसन्तः, ज्येष्ठे आषाढे च ग्रीष्मः, श्रावणे भाद्रपदे च वर्षा, आश्विने कार्तिके च शरद्, मार्गशीर्षे पौषे हेमन्तः, माघे फाल्गुने च शिशिरः ऋतुः भवति। एतेषां ऋतूनां स्वकीयं सौन्दर्यं महत्त्वं चाप्यस्ति। एतैः जनजीवनं रुचिकरं भवति।

अधुना श्रावणमासः। अयं वर्षाकालः। ग्रीष्मकालस्य प्रचण्डातपेन सन्तप्ता पिपासिता वसुन्धरा प्रथमवर्षायाः जलं पीत्वा अतीव तृप्यति। अधुना रजः शान्तम्। इतस्ततः सर्वत्र आनन्दः। कृषकाः, शिशवः, पशवः, गोपालाः, खगाः, मृगाः, मयूराः, कपयः सर्वे प्रसन्नाः।

आकाशे श्यामवर्णाः मेघाः गर्जन्ति। मेघेषु च विद्युत् विलसति। वर्षाकाले प्रायः सूर्यस्य अपि दर्शनं दुर्लभम्। मेघानां गर्जनं श्रुत्वा वने मयूराः नृत्यन्ति। गजेन्द्राः, सिंहाः च प्रसन्नाः भवन्ति। वर्षाकाले वनेषु वृक्षाः पुष्पिताः भवन्ति। तेषु भ्रमराः गुञ्जन्ति। सरोवराणि जलेन पूर्यन्ते। तेषु कमलानि विकसन्ति। अनेकवर्णाः मण्डूकाः अपि शब्दं कुर्वन्ति।

नद्यः वेगेन वहन्ति। वर्षाकाले नदीनां जलं मलिनं भवति। क्षेत्राणां वन-पर्वतानां च वर्षाकाले दृश्यं रमणीयं भवति। पादपानां नवपल्लवानि सर्वेषां मनांसि हरन्ति।

अस्मिन् ऋतौ वयं पक्वानि अनेकवर्णानि आम्रफलानि आस्वादयामः। श्यामवर्णानि जम्बूफलानि स्वादूनि भवन्ति। एवं नारिकेल-दाडिमादीनि फलानि अपि वर्षाकाले भवन्ति। वर्षपर्यन्तं पृथिव्यां सुप्तानि बीजानि वर्षाकाले प्ररोहन्ति।

वर्षर्तौ एव बहवः प्रसिद्धाः उत्सवाः अपि भवन्ति। तेषु स्वतन्त्रतादिवसः, श्रावण-मासस्य पूर्णिमायां रक्षाबन्धनं, केरलेषु तिरु-वोणम् उत्सवः, कश्मीरप्रदेशे च प्रसिद्धा अमरनाथ-यात्रा इत्येते महत्त्वपूर्णाः उत्सवाः सन्ति। भाद्रपद-मासस्य कृष्णपक्षस्य अष्टम्यां भगवतः श्रीकृष्णस्य जन्मोत्सवः अपि वर्षाकाले भवति। मुस्लिम-धर्मावलम्बिनां ईद्महोत्सवः अपि अस्मिन् काले भवति। वर्षाकालस्य रोचकं वर्णनं बहवः कवयः स्व-स्वकाव्येषु अकुर्वन्। आदिकविः वाल्मीकिः रामायणे वर्षर्तोः वर्णनम् एवमकरोत्—

वहन्ति वर्षन्ति नदन्ति भान्ति, ध्यायन्ति नृत्यन्ति समाश्वसन्ति।
नद्यो घना मत्तगजाः वनान्ताः प्रियाविहीनाः शिखिनः प्लवङ्गाः॥

शब्दार्थ

आतपः	धूप
प्रचण्डः	तेज, तीव्र
पिपासिता	प्यासी
नवपल्लवानि	नए पत्ते
वहन्ति	बहती हैं

अभ्यास

1. **संस्कृत में उत्तर दो—**
   (क) एकस्मिन् वर्षे कति मासाः भवन्ति ?
   (ख) वसन्तः ऋतुः कयोः मासयोः भवति ?
   (ग) वर्षर्तौ के के उत्सवाः भवन्ति ?

(घ) त्वं वर्षर्तौ कानि फलानि भक्षयसि ?

(ङ) वर्षर्तौ कस्य महापुरुषस्य जन्मदिवसः भवति ?

2. **नीचे लिखे कथनों के उचित उत्तरों पर सही ✓ का निशान लगाओ ।**

(क) वर्षाकाले नदीनां जलं निर्मलं / मलिनं भवति ।

(ख) कालिदासः / वाल्मीकिः वर्षाकालस्य वर्णनं रामायणे अकरोत् ।

(ग) वर्षर्तौ दीपावली / रक्षाबन्धनं उत्सवः भवति ।

(घ) वने मयूराः गर्जन्ति / नृत्यन्ति ।

3. **नीचे लिखे शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो—**

ऋतवः, आतपः, पक्वानि, नद्यः, पल्लवानि, पिपासिता ।

4. **नीचे बहुवचन में दिए गए शब्दों के उसी विभक्ति में एकवचन तथा द्विवचन के रूप लिखो—**

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
....	....	ऋतवः
....	....	फलानि
....	....	नद्यः
....	....	लतासु
....	....	अस्माकम्
....	....	वनानाम्
....	....	एतेषाम्

5. **दिए गए उदाहरण के अनुसार, मध्यम और उत्तम पुरुष में वाक्य बनाओ—**

अ	आ	इ
प्रथम पुरुष	मध्यम पुरुष	उत्तम पुरुष
ते पश्यन्ति	यूयं पश्यथ	वयं पश्यामः
जनाः आम्रफलानि भक्षयन्ति	....	....
पर्यटकाः काश्मीर-देशं गच्छन्ति	....	....

6. **निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करो—**

(क) कपि: वृक्षेषु वसन्ति ।

(ख) वयं जम्बूफलानि भक्ष्यन्ति ।

(ग) अहं श्वः गमिष्यति ।

(घ) जम्बूफलं अति मधुरः भवति ।

7. **संस्कृत में अनुवाद करो—**

(क) एक वर्ष में बारह महीने होते हैं ।

(ख) एक महीने में तीस दिन तथा चार सप्ताह होते हैं ।

(ग) चैत्र और वैशाख मासों में वसन्त ऋतु होती है ।

(घ) वर्षाकाल में आकाश में मेघ गर्जते हैं ।

(ङ) वनों में मोर नाचते हैं ।

(च) छोटे बालक वर्षा के पानी में खेलते हैं ।

विंशः पाठः

दधीचेः औदार्यम्

पुरा वृत्रासुरः देवान् भृशमपीडयत्। इन्द्रादयः ते देवाः प्रजापतिमुपागच्छन्। तान् समागतान् दृष्ट्वा प्रजापतिः आगमनस्य कारणमपृच्छत्। ते प्रत्यवदन्— "प्रभो! वृत्रासुरः अस्मान् पीडयति। तस्य शक्तेः पुरतः वयं स्थातुं न शक्नुमः। अतः भीताः वयमत्रागताः। प्रजापतिः

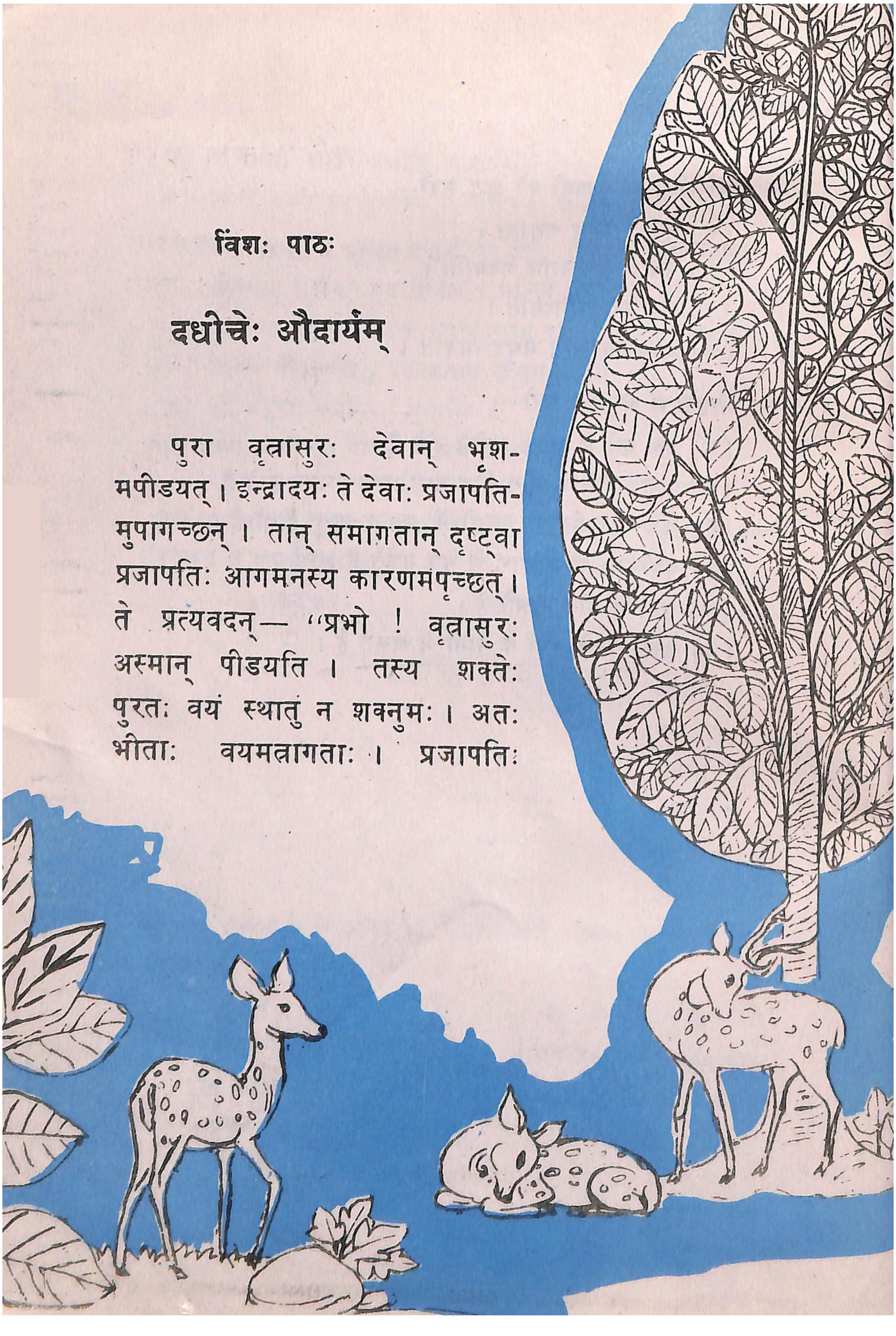

अभणत्— "हरिः एव अस्मान् रक्षितुं समर्थः । तमेव शरणं गच्छामः ।"

प्रजापतिः देवैः साकं वैकुण्ठं गत्वा हरये सर्वमपि वृत्तान्तं न्यवेदयत् । तत् श्रुत्वा हरिः अकथयत्— "भोः प्रजापते ! देवाः महर्षेः दधीचेः अन्तिकं गत्वा तस्मात् अस्थियाचनं कुर्वन्तु । सः नूनमस्थीनि दास्यति । तैः अस्थिभिः वज्रायुधं घटयत । तेन वृत्रं हन्तुं युद्धे असुरान् जेतुं च पारयिष्यथ ।"

ततः सर्वे देवाः दधीचेः तपोवनमगच्छन् । तत् तपोवनं कपीनां क्रीडाभिः, हरिणानां विहारैः, अलीनां गुञ्जनैः च

रमणीयमासीत् । तत्र बहवः मुनयः उपविष्टाः तपस्यां कुर्वन्ति स्म ।

देवाः दधीचेः आश्रमं प्राविशन् । तत्र ते अनेकैः ऋषिभिः परिवृतमग्निमिव प्रभया देदीप्यमानं दधीचिमपश्यन् । ते ऋषीन् दधीचिं च दृष्ट्वा अनमन् । दधीचिः इन्द्रं— "किमर्थं यूयमत्रागताः" इत्यपृच्छत् । इन्द्रः सादरमकथयत्— "महर्षे, वयं वृत्रेण पीडिताः त्वां शरणमुपागताः । कृपया त्वमस्मभ्यं स्वानि अस्थीनि प्रयच्छ । घटयाम तैः अस्थिभिः आयुधम्, येन वयं वृत्रं हन्तुं पारयामः।" दधीचिः इन्द्रस्य वचनं श्रुत्वा नितरामतुष्यत् । सः अकथयत्— "भोः इन्द्र ! अद्य मम जीवितं सफलं जातं यत् मे शरीरं युष्माकमुपकाराय भवति । परोपकारार्थमिदं शरीरम् । अहं युष्मभ्यमिदं शरीरं सहर्षं प्रयच्छामि, स्वीकुरुत ।" सः नेत्रे निमील्य समाधिस्थः अभवत् । देवाः तस्य अस्थीनि आदाय तैः वज्रायुधमरचयन् । तेन च इन्द्रः युद्धे वृत्रासुरममारयत् । एवं देवाः दधीचेः औदार्येण वृत्रभयात् मुक्ताः अभवन् ।

शब्दार्थ

भृशम्	अत्यधिक
प्रत्यवदन्	उत्तर दिए
अस्थीनि	हड्डियों को
वज्रायुधम्	वज्रास्त्र (वज्र का बनाया हुआ हथियार)
घटयाम	बनाएँ

अभ्यास

1. **संस्कृत में उत्तर दो—**
   (क) पुरा कः देवान् अपीडयत् ?
   (ख) प्रजापतिः देवान् किमवदत् ?
   (ग) हरिः वृत्रासुरं हन्तुं कीदृशमुपायमुपदिशति स्म ?
   (घ) मुनिं दृष्ट्वा देवाः किमकुर्वन् ?
   (ङ) इन्द्रः महर्षिं किं न्यवेदयत् ?
   (च) दधीचिः किं प्रत्यवदत् ?

2. (क) **निम्नलिखित रूपों के लिंग, विभक्ति और वचन बताओ—**
   अस्मान्, क्रीडाभिः, प्रभया, अस्थीनि, प्रभो, प्रजापते ।
   (ख) **निम्नलिखित शब्दों में धातु, लकार, पुरुष और वचन बताओ—**
   पारयिष्यथ, पारयाम, शक्नुमः, कुर्वन्तु, उपागच्छन् ।
   (ग) **निम्नलिखित धातुओं में 'तुमुन्' प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ—**
   श्रु, पा, गम्, नी, हृ ।

3. **निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो—**
   पुरतः, अन्तिकम्, नूनम्, नितराम्, साकम् ।

4. **किसने, किससे कब कहा, बताओ—**
   (क) हरिः एव अस्मान् रक्षितुं समर्थः ।
   (ख) सः नूनं अस्थीनि दास्यति ।
   (ग) परोपकारार्थमिदं शरीरम् ।

5. **कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उचित शब्द चुनकर वाक्य पूरा करो—**
   (क) ……… भीताः देवाः प्रजापतिमुपागच्छन् ।
   (वृत्रासुरं, वृत्रासुरात्, वृत्रासुरस्य)

(ख) ……… पुरतः कश्चन वटवृक्षः तिष्ठति ।
(देवालयात्, देवालयस्य)

(ग) जनकः ……… पारितोषिकं यच्छति । (पुत्राय, पुत्रस्य, पुत्रम्)

6. **संस्कृत में अनुवाद करो—**

(क) सभी बालक उपवन देखने गये ।

(ख) उपवन बहुत रमणीय था ।

(ग) वहाँ बहुत से लोग बैठे हुए थे ।

(घ) उनके बच्चे इधर-उधर खेल रहे थे ।

(ङ) ये बालक भी उनके साथ गेंद खेलते हैं ।

एकविंशः पाठः

सुभाषितानि

खलः सर्षपमात्राणि परच्छिद्राणि पश्यति ।
आत्मनो बिल्वमात्राणि पश्यन्नपि न पश्यति ॥ 1 ॥

सर्पदुर्जनयोर्मध्ये वरं सर्पो न दुर्जनः ।
सर्पो दशति कालेन दुर्जनस्तु पदे पदे ॥ 2 ॥

चन्दनं शीतलं लोके चन्दनादपि चन्द्रमाः ।
चन्द्रचन्दनयोर्मध्ये शीतला साधुसङ्गतिः ॥ 3 ॥

वृथा वृष्टिः समुद्रेषु वृथा तृप्तस्य भोजनम् ।
वृथा दानं समर्थस्य वृथा दीपो दिवापि च ॥ 4 ॥

शरदि न वर्षति गर्जति, वर्षति वर्षासु निःस्वनो मेघः ।
नीचो वदति न कुरुते, न वदति सुजनः करोत्येव ॥ 5 ॥

शब्दार्थ

सर्षपः	सरसों
बिल्वः	बेल का फल

वृथा	व्यर्थ
स्वनः	ध्वनि
तृप्तस्य	सन्तुष्ट व्यक्ति का

अभ्यास

1. श्लोक संख्या 2 और 4 को कण्ठस्थ करो और उनका सस्वर पाठ करो।
2. श्लोक संख्या 5 का भावार्थ लिखो।
3. इस पाठ में आये हुए तृतीयान्त रूपों को छांटो।

द्वाविंशः पाठः

भारते भाति भारती

संस्कृतभाषा भारतवर्षस्य संस्कारभाषा। भारते संस्कृतभाषायाः प्रतिदिनं विविधसंस्कारकार्येषु प्रयोगः भवति। एतस्याः अनेकासु विशेषतासु इयम् अन्यतमा विशेषता यत् अस्याः वाङ्मये विद्यमानाः सूक्तयः अभ्युदयाय प्रेरयन्ति। अत एव वयं भारतप्रशासनस्य विभिन्नेषु विभागेषु ध्येय-वाक्य-रूपेण एतेषां प्रयोगं पश्यामः।

सत्यमेव जयते

एतत् चित्रं पश्यत। एतत् भारतशासनस्य राजचिह्नमस्ति। अत्र 'सत्येमव जयते' इत्येषः संस्कृतपद्यांशः लिखितः अस्ति। भारतशासनस्य मुद्रायामङ्कितमिदं संस्कृतस्य महत्त्वमुद्भावयति।

जीवनबीमानिगमस्य चित्रे द्वयोः हस्तयोः मध्ये एकः दीपः अस्ति। अधः च 'योगक्षेमं वहाम्यहम्' इति लिखितम्। श्रीमद्भगवद्गीतायाः अयं पद्यांशः अस्य शोभां द्विगुणयति।

भारतीयवायुसेनायाः चिह्ने विमानं वर्तते। तत्र लिखितं वायुसेनायाः ध्येयवाक्यम् 'नभः-स्पृशं दीप्तम्' संस्कृतभाषायाः गौरवगाथां प्रकटयति।

हरियाणा-शासनस्य राज्यचिह्नस्य चित्रे अपि श्रीमद्-भगवद्गीतायाः 'योगः कर्मसु कौशलम्' इत्ययं श्लोकांशः जनान् प्रेरयति । लोकसभाध्यक्षस्य आसनस्योपरि अपि सर्वोच्चस्थाने उल्लिखिता अस्ति— 'धर्मचक्र-प्रवर्तनाय' इति संस्कृतवाक्यम् । लोकसभायाः केन्द्रीयसभातलस्य भित्तिकायां 'अयं निजः परो वेति' सुप्रसिद्धः संस्कृत-श्लोकः लिखितः अस्ति । डाक-तार-विभागस्य ध्येयवाक्यम्— 'अहर्निशं सेवामहे' अतीव उपयुक्तमस्ति । यतः अस्य विभागस्य कार्यं दिने रात्रौ च निरन्तरं चलति ।

पश्यत, इदं 'राष्ट्रीयशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षण-परिषद्' इत्यस्य ध्येय-वाक्यं 'विद्ययाऽमृतमश्नुते' संस्कृतभाषायाम् एव अस्ति ।

अन्ये चापि बहवः भारतशासनस्य विभागाः सन्ति येषु संस्कृतध्येय-वाक्यानि स्वीकृतानि सन्ति । अलमतिविस्तरेण । एतेन सुस्पष्टं भवति यत् संस्कृतभाषा भारतस्य जीवनभूता । भारते भाति भारती ।

शब्दार्थ

भारती	वाणी
अभ्युदयाय	उन्नति के लिए
प्रेरयन्ति	प्रेरित करती हैं
ध्येयवाक्यानि	ध्यान देने योग्य वाक्य (Motto)
अहर्निशम्	दिन-रात

अभ्यास

1. **संस्कृत में उत्तर दो—**
   (क) भारतशासनस्य राजचिह्ने किं लिखितम् ?
   (ख) जीवनबीमानिगमस्य किं चिह्नम् ?
   (ग) 'योगक्षेमं वहाम्यहम्' एषः पद्यांशः कस्मात् ग्रन्थात् उद्धृतः ?
   (घ) डाक-तार-विभागस्य ध्येयवाक्यं कथमुपयुक्तम् ?

2. **(क) सन्धि-विच्छेद करो—**
   अतीव, वहाम्यहम्, श्लोकांशः, वेति ।

   (ख) निम्नलिखित पदों का पदपरिचय दो—
   भाषायाः, मुद्रायाम्, हस्तयोः, शोभाम् ।

   (ग) निम्नलिखित का वाक्यों में प्रयोग करो—
   यच्छति, विना, अलम्, सह ।

   (घ) शुद्ध करो—
   (1) धर्मस्य विना कल्याणं न भवति ।
   (2) श्रीरामः लक्ष्मणस्य सह वनं गच्छति ।
   (3) त्वम् इदं पुस्तकं मां यच्छ ।

3. **कोष्ठक में दिए गए शब्दों में उचित विभक्ति लगाकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—**
   (क) रामः .... पुस्तकं यच्छति । (मोहन)
   (ख) .... विना सफलता न भवति । (परिश्रम)
   (ग) अलं .... । (कोलाहल)

त्रयोविंशः पाठः

आभाणकाः

1. तेजसां न वयः समीक्ष्यते ।
2. न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत् ।
3. हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः ।
4. सदाभिमानैकधना हि मानिनः ।
5. मितं च सारं च वचो हि वाग्मिता ।
6. शठे शाठ्यं समाचरेत् ।
7. न कूपखननं युक्तं प्रदीप्ते वह्निना गृहे ।
8. संहतिः कार्यसाधिका ।
9. दूरतः पर्वताः रम्याः ।
10. आचारः परमो धर्मः ।

अभ्यास

1. 'आभाणक-संख्या 1, 3, 6 तथा 8 को कण्ठस्थ करो ।
2. 'आभाणक-संख्या' 2, 5, 7 तथा 9 का अर्थ लिखो ।

परिशिष्टम्

शब्द-कोशः

अ

अकुर्वन्	करते थे
अकृन्तत्	काटा
अङ्कितम्	चिह्नित
अङ्के	गोद में
अक्षिपत्	फेंका
अवदत्	कहा
अटनीयम्	घूमना चाहिए
अतुष्यत्	सन्तुष्ट हुआ
अत्रोटयत्	तोड़ा
अधिपतिः	स्वामी, मुखिया
अनन्ते	जिसका अन्त नहीं है, उसमें
अनमन्	नमस्कार किया
अनाहूतः	बिना बुलाए हुए
अनागतम्	नहीं आया हुआ
अनुकरणीया	अनुसरण करने योग्य
अनुसर्तव्या	अनुसरण किया जाए
अन्तर्हितः	गायब हो गया
अन्तिके	पास
अन्यस्मात्	अन्य (दूसरे) से
अन्यत्	दूसरा
अन्विष्यति	खोजता है
अन्वेष्टुम्	खोजने के लिए
अनृतम्	असत्य
अपनयतु	दूर करना
अपसर	हट
अपि	भी
अपूर्वः	विचित्र, अनोखा
अपृष्टः	नहीं पूछा गया
अभिलषामि	चाहता हूँ, इच्छा करता हूँ
अभीष्टम्	इच्छित
अभ्युदयाय	उन्नति के लिए
अभ्रमत्	घूमा
अमुञ्चत्	छोड़ा
अयाचत्	माँगा
अरण्यम्	जंगल
अलभत	प्राप्त किया
अवलोकयति स्म	देख रहा था
अवरुध्य	रोककर
अविश्वस्ते	अविश्वासी पर
अवीजयत्	पंखा झलता

अश्वमेधयागम्	अश्वमेधयज्ञ (ऐसा यज्ञ जिसमें घोड़ा छोड़ा जाता है।)
अश्वरक्षकः	घोड़े की रक्षा करने वाला
असकृत्	बार-बार
अस्थियाचनम्	हड्डियों की याचना
अस्मभ्यम्	हमारे लिए
असाराणाम्	सारहीनों का
असौ	यह
अहर्निशम्	दिन-रात
अत्युन्नताः	अधिक ऊँचे
आ	
आकण्ठम्	गले तक
आकुलः	दुःखी
आकृतिः	शकल
आगत्य	आकर
आचरति स्म	आचरण करता था
आतपः	गर्मी, धूप
आतिथ्यम्	सत्कार
आनयमानः	ले आया जाता हुआ
आनीय	ले आकर
आप्नोति	प्राप्त करता है
आयाति	प्राप्त होता है
आयुधम्	अस्त्र-शस्त्र
आरुह्य	चढ़कर
आरभ्य	आरम्भ करके
आस्वादयामः	चखें
आहारम्	भोजन
इ	
इत्युक्त्वा	ऐसा कहकर
इह	इस संसार में, यहाँ
ई	
ईदृशी	ऐसा
उ	
उड्डीय	उड़कर
उत्थातव्यम्	उठना चाहिए
उत्थाय	उठाकर
उद्भावयति	उत्पन्न करता है
उद्यानपालकम्	फुलवारी की रखवाली करनेवाले को
उन्नताः	ऊपर की ओर उठे हुए
उपरि	ऊपर
उपगम्य	पास जाकर
उपागतः	समीप आ गया
उपेत्य	पास आकर
उमाम्	पार्वती को
उष्णता	गर्मी
ए	
एकदा	एक दिन
एकस्मिन्	एक
एतादृशम्	ऐसा
एति	जाता है
औ	
औदार्यम्	उदारता
क	
कदर्य	कंजूस
कमपि	किसी को भी
कदाचन	कभी
कपिः	बन्दर
करेण	हाथ से, सूंड से
कर्तव्यम्	करना चाहिए
कानिचित्	कुछ

कार्यहन्तारम्	काम बिगाड़ने वाले को
काष्ठम्	लकड़ी
कियत्	कितना
किंशुकाः	पलाश
कीर्तिः	यश
कुलसम्भवाः	कुल (वंश) में उत्पन्न
कुसुमितैः	खिले हुए
कृतघ्नः	जो किए हुए उपकार को नहीं मानता है
कृषीवलाः	किसान
केचन	कुछ
केसरः	सिंहादि की अयाल
कोटरः	वृक्ष की खोखर
कोणे	कोने में
कोषः	खजाना
कौतुकेन	खेल-खेल में
कौतूहलेन	कौतूहल से
क्रमेण	क्रम से
क्रीडाभिः	खेल से
क्रीडितुम्	खेलने के लिए
क्रेष्यसि	खरीदोगे
क्षपयन्ति	बिताते हैं
क्षीणः	कमजोर
ख	
खगाः	पक्षी-गण
खननम्	खोदना
खलोक्तिषु	दुष्ट के वचनों में
गगने	आकाश में
गणितम्	गिना गया है, माना गया है
गर्तम्	गड्ढा
गर्वितः	घमण्ड से युक्त

गुहाम्	गुफा में
गोपालाः	गाय का पालन करने वाले
गौरवान्वितः	गौरव से युक्त
ग्रामाधिकृतः	ग्राम का मुखिया
च	
चञ्च्वा	चोंच से
चटका	गौरैया
चौरहार्यम्	चोर के द्वारा चुराने के योग्य
छ	
छिन्नान्	कटी हुई को
ज	
जनकेन	पिता के द्वारा
जम्बूवृक्षः	जामुन का वृक्ष
जलाशयम्	तालाब
जाया	पत्नी
जीर्णः	पुराना
जीवातुभूता	प्राण, सर्वस्व
ज्ञात्वा	जानकर
त	
तथाकृते	ऐसा करने पर
तन्द्रा	थकान
तपस्विनी	तपस्या करने वाली
तरुभिः	वृक्षों से
तापसः	तपस्वी
तुरगः	घोड़ा
तृप्यति	तृप्त होता है
तृषार्तः	प्यासा होकर
तेजसाम्	तेजस्वियों का
तोषयामि	सन्तुष्ट करता हूँ

द

दशति	काटता है
दास्यामि	दूंगा
दिक्षु	दिशाओं में
दिग्विजयाय	दिशाओं को जीतने के लिए
दीयताम्	दीजिए
दीर्घसूत्रता	देर से कार्य करने की प्रवृत्ति
दुर्जयः	जिसका जीतना कठिन हो
दूर्वामये	दूब घास से युक्त
दूरात्	दूर से
देदीप्यमानम्	चमकता हुआ
देवमातृकाणि	मातृवत् कार्य करनेवाले देव (जहां बादलों से बरसने से ही सिंचाई होती हो, ऐसे प्रदेश)
देहिनः	देह धारण करने वाले
द्विगुणयति	दोगुना करता है (शोभा को दोगुना बढ़ा देता है)
धिक्	धिक्कार
ध्येयः	ध्यान के योग्य
ध्वस्तानि	टूटे फूटे

न

नत्वा	प्रणाम करके
नदन्ति	आवाज करते हैं
नदीमातृकाणि	मातृवत् कार्य करनेवाली नदियां (जहां नदियों के द्वारा ही सिंचाई होती हों—ऐसे प्रदेश)
नयः	नीति
नयने	दो आँखें
नराधमः	नीच मनुष्य
नववादनसमयः	नौ बजे का समय
नारिकेलदाडिमादीनि	नारियल, अनार आदि
नाशयितव्यः	नष्ट करने योग्य
नासिकायाम्	नाक में
निःस्वनः	आवाज नहीं करने वाला
नितराम्	अधिक
निमग्नाः	लगे हुए
निमील्य	मूंद कर
निर्गन्धाः	गन्धहीन
निर्गच्छति	निकलता है
निर्माय	बनाकर
निवर्तयत	लौटा लीजिए
निवारय	रोको
निष्ठाम्	आस्था (को)
निहितम्	रखा हुआ
नीतिमान्	नीति-सम्पन्न
नीत्या	नीति से
नूनम्	निश्चय ही
नृपः	राजा
न्यवेदयत्	निवेदित किया
न्यसेत्	रखे

प

पक्वानि	पके हुए
पञ्जरम्	पिंजरा
पणाः	पैसे
पदे पदे	पग पग पर
परिजनैः	सेवकों के द्वारा
परितः	चारों ओर
परित्यज्य	छोड़कर

परिभव:	पराजय	प्रभूतः	बहुत अधिक
परियुता	घिरी हुई	प्रमत्तः	मतवाला
परिवृता	घिरी हुई	प्रयच्छ	दो
परिष्वज्य	आलिंगन करके	प्ररोहति	उगता है
परिहर्तव्यः	दूर किया जाना चाहिए	प्रसृता	फैली हुई
परोक्षे	परोक्ष में	प्राविशन्	घुसे
परः	दूसरा	प्रासादम्	महल
पात्रताम्	योग्यता	प्रियवादिनम्	सुन्दर बोलने वाले को
पारयिष्यथ	समर्थ होंगे	प्रीतोऽस्मि	प्रसन्न हूँ
पावनम्	पवित्र	प्रेरयति	प्रेरित करता है
पाषाणखण्डानि	पत्थर के टुकड़े	प्लवङ्गः	बन्दर
पिण्डम्	लौंदा, ठोस	प्लावितानि	बहाये गये, जलथल किये गये
पितरौ	माता और पिता		
पिपासिता	प्यासी		
पीडयति	कष्ट देता है	ब	
पुनः	फिर	बद्धान्	बन्द, बन्धे हुए को
पुरा	पहले	बहवः	अनेक
पुराणकालात्	प्राचीनकाल से	बुद्ध्वा	जानकर
पूतम्	पवित्र	भ	
पूर्यन्ते	भर जाते हैं	भटाः	सैनिक
पृथक्	अलग	भाटकम्	किराया
पृष्ट्वा	पूछकर	भान्ति	शोभित होते हैं
प्रचण्डः	अत्यन्त तीव्र	भारकारि	बोझ प्रतीत होने वाली
प्रचोदितः	प्रेरित होकर	भारति	हे सरस्वती
प्रणम्य	प्रणाम करके	भाषते	कहता है
प्रतिमा	मूर्ति	भीतिः	डर
प्रतिवसति स्म	रहता था	भुवि	पृथ्वी पर
प्रत्यवदन्	बोले	भूतिः	सम्पत्ति
प्रदीप्ते	दीप्त हो जाने पर, फैल जाने पर	भूपतिः	राजा
		भूषितः	अलंकृत
प्रबुद्धः	जगा हुआ	भृशम्	बहुत
प्रभया	आभा (प्रभा) के द्वारा	भेकाः	मेंढक

भ्रातृभाज्यम्	भाइयों द्वारा बाँटी जाने योग्य
म	
मक्षिका	मक्खी
मण्डपम्	चबूतरा
मण्डूकानाम्	मेंढकों का
मत्तगजः	मतवाले हाथी
मतिः	बुद्धि
मध्याह्ने	दोपहर में
मध्ये	बीच में
मन्त्रणा	सलाह
मयूराः	मोर
महत्तमम्	सबसे बड़ा
मा	नहीं
मानिनः	अभिमानी
मानैकधनाः	सम्मान ही जिनका धन है
मार्जारी	बिल्ली
मितम्	कम
मृग्यते	खोजा जाता है
मृषा	व्यर्थ
मूढचेता	मूर्ख
मोचयित्वा	छोड़कर
य	
यच्छति	देता है
युगपद्	एक साथ
योगः	जोड़
योगक्षेमम्	सम्पत्ति को प्राप्ति और उसकी रक्षा
र	
रजः	धूल
रम्याः	रमणीय
राजहार्यम्	राजा के चुराने जाने योग्य
रिपवः	शत्रु
ल	
लालायितौ	लालायित
लीलयैव	खेलते-खेलते ही
लुब्धः	लालची
व	
वचसा	वाणी से
वटुः	ब्रह्मचारी, लड़का
वज्रायुधम्	वज्र से बना हुआ इन्द्र का अस्त्र
वत्स्यामि	वास करूँगा
वर्धनीया	बढ़ने वाली, बढ़ने योग्य
वनोद्देशः	वनप्रान्त
वनान्ताः	जंगल के अन्त
वसुन्धरा	पृथ्वी
वयः	उमर
वहामि	वहन करता हूँ
वह्निना	आग से
वा	या
वाग्मिता	वाक्पटुता
वाङ्मये	साहित्य में
वाचालः	बातूनी
वाञ्छसि	चाहते हो
वाप्यां	कुएँ में
वारंवारम्	बार-बार
वाहकम्	वाहक को, ड्राइवर को
वाहनम्	सवारी
विद्यते	है
विद्ययालङ्कृतः	विद्या से शोभित

विद्युत्	बिजली
विधवाम्	विधवा को
विराजते	शोभित होता है
विलपसि	रोती हो
विशीर्णानि	टूट-फूट गए
विवशः	विवश होकर
विश्वसिति	विश्वास करता है
विषकुम्भम्	विष से भरा हुआ घड़ा
विहरत	विहार करें
विहारैः	विचरणों से
विहङ्गेषु	पक्षियों में
वृषभः	साँड़
वेलायां	समय पर
वैकुण्ठम्	विष्णु के निवास स्थान को
वैद्युतम्	बिजली को
वैरी	शत्रु
वोढुम्	ले जाने के लिए
व्यजनेन	पंखे से
व्यञ्जनैः	मिर्च, मसाला आदि से बनाया खाद्य वस्तु
व्ययतो	खर्च करने पर
व्यये कृते	खर्च किये जाने पर

श

शक्नुमः	सकते हैं
शर्करा	चीनी
शम्	शुभ हो
शाठ्यम्	शठता, दुष्टता
शिखिनः	मयूर
शिलातले	चट्टान पर, शिलापट्ट पर
शिशवः	बच्चे
शुण्डेन	सूँड़ से
शैत्यम्	ठंड
शोभते	शोभित होता है

ष

षट्	छः

स

सञ्चयात्	जोड़ने से
सन्ततिः	सन्तान
सन्तप्ताः	सन्तप्त, दुखी
सद्यः	तत्काल
समवायः	संगठन
समागच्छत्	आया
समाश्वासयितुम्	आश्वासन देने के लिए
समीक्षते	समीक्षा करते हैं
सम्पादयन्ति	सम्पादित करते हैं
सम्भाषणम्	बातचीत
संस्कारभाषा	संस्कार देने में समर्थ भाषा
संस्कृतः	संस्कार किया हुआ
संहतिः	संगठन
सर्षपः	सरसों
सविधे	पास
सस्यम्	अनाज
साकम्	साथ
साधिका	सिद्ध कराने वाली
सान्निध्यम्	सान्निध्य, निकटता
सारम्	संक्षिप्त सार
सारमात्रम्	सारांश
सिक्ताकण	रेत के कण
सिक्तानि	सिंचित
सिद्ध्यति	सिद्ध होता है
सुताम्	पुत्री को
सेचनेन	सिंचाई के द्वारा

सेतु	पुल
सेवामहे	सेवा करते हैं
सेव्यः	सेवा करने योग्य
सोढुम्	सहने के लिए
सोल्लासम्	आनन्दपूर्वक
स्फोटयिष्यति	तोड़ेगा
स्थास्यति	ठहरेगा
स्पृष्टानि	स्पर्श किया हुआ, स्पृष्ट
स्वल्पम्	थोड़ा
स्वागतम्	स्वागत
स्वैरम्	स्वेच्छा पूर्वक
ह	
हन्त	दुःख सूचक अव्यय
हन्तुम्	मारने के लिए
हातव्यम्	नाश करना चाहिए
हितम्	हितकारी
हृष्टः	खुश
होरार्धेन	आधे घण्टे से

0603

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAI COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING